ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन २०८२ मार्च २०२६

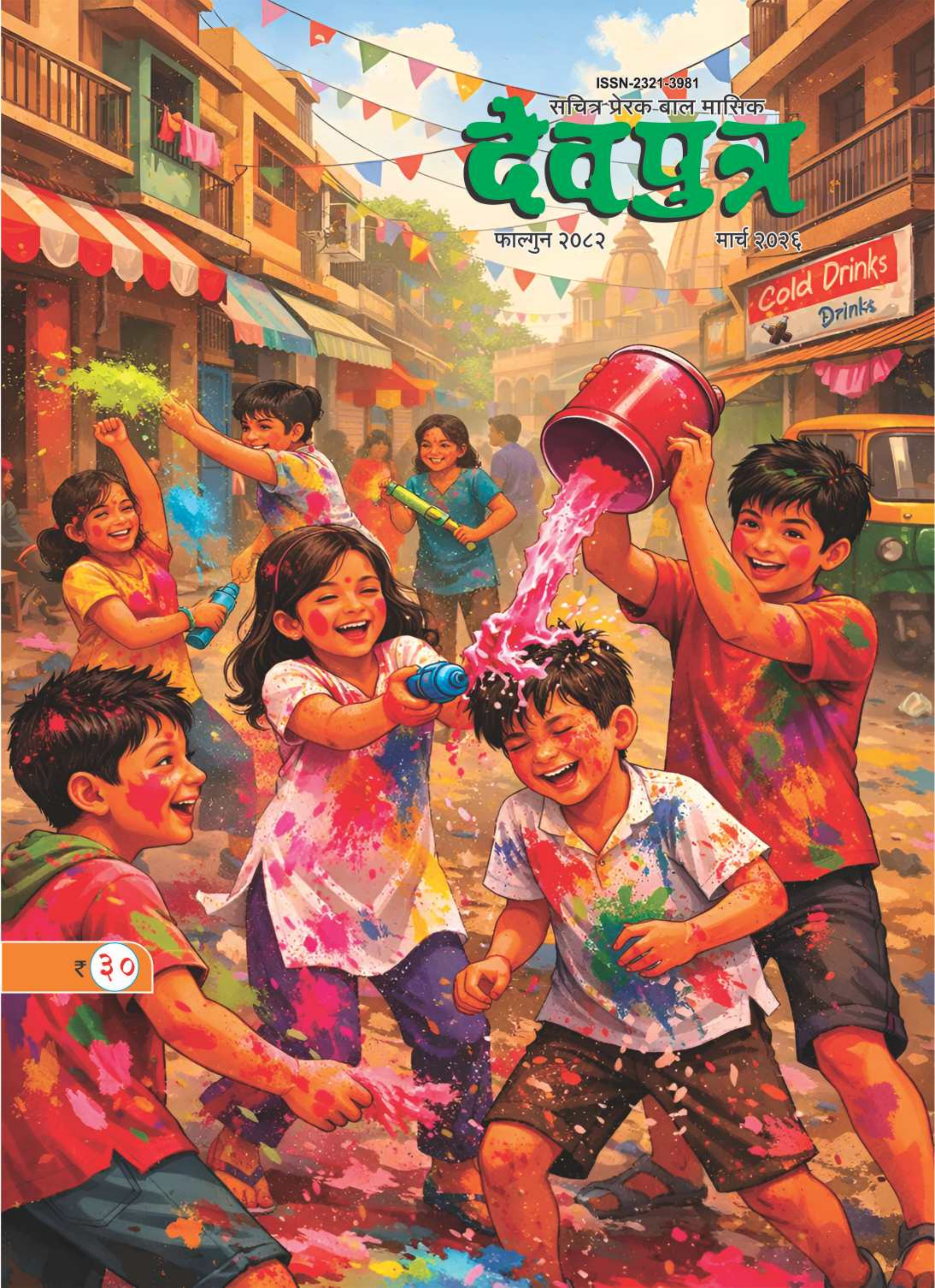

₹ ३०

होली गीत

– रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

होली आयी रे! होली आयी रे!

सबने रंग–गुलाल उड़ाया,
कोई नहीं कहीं शरमाया।
बाबा चाचा ताऊ जी ने,
अपना–अपना रोब जमाया।।

अम्माजी ने ढोलक के संग, फगुनी गायी रे।।
होली आयी रे! होली....।।

राजू भैया झूमे–नाचे,
श्यामू दौड़े भरे कुलांचे।
हँसी–हँसी में कहीं किसी के,
कहीं किसी ने जड़े तमाचे।।

अरे! अरे! यह मस्तानों की, टोली आयी रे।।
होली आयी रे! होली...।।

गुझिया की मिठास मन भायी,
सोनू जी ने सोलह खायी।
पापड़ पपड़ी और नमकीन,
रामदीन के मन पर छायी।।

यह तो खुशियों की भर–भर कर, झोली लायी रे।।
होली आयी रे। होली...।।

– हरदोई
(उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन	२०८२	वर्ष	४६
मार्च	२०२६	अंक	९

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	३० रुपये
वार्षिक	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस माह होलिकोत्सव के पश्चात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (इस वर्ष १९ मार्च) से एक और नया वर्ष आरंभ हो रहा है। नया संवत् नया वर्ष होने से सबके मन में कुछ नया करने का उत्साह जाग्रत होता है और यह होना भी चाहिए। मैंने आप जैसे एक बच्चे से जब जानना चाहा कि यह नया करने का विचार मन में क्यों आता है? उसने उत्तर दिया 'क्योंकि हम पुराना करते-करते ऊब जाते हैं इसलिए 'कुछ अलग, कुछ नया' करने की इच्छा होती है। वह दो पल ठहरा फिर बोला- ''देखिए पेड़ भी तो पुराने पत्ते गिराकर नए पत्ते धारण कर लेता है।''

बात सही है पर सोचने की भी है। पुराना काम पूरा हुआ इसलिए नया आरंभ करना तो ठीक है लेकिन ऊब कर अधूरा छोड़ दें और नया करने लगे यह उचित नहीं लगता।

सोचिए! हमारा राष्ट्र भी सतानत है, जगत का प्रथम राष्ट्र और इस नववर्ष के रूप में सृष्टि का यह आदि पर्व, हमारा भी प्रथम पर्व है। इसे मनाने के कारण और प्रकार में एक पारम्परिक रूप से वैज्ञानिकता भी है और सांस्कृतिक भावभूमि भी। इसलिए नववर्ष मनाते समय नवाचार करते हुए हमें यह अवश्य ही ध्यान रखना चाहिए कि हम जो परिवर्तन स्वीकार रहे हैं वह परिवर्तन योग्य हैं या नहीं?

हर नई बात या नवाचार बुरा नहीं होता और पुराना भी सब अच्छा ही नहीं होता। इसलिए परंपरा पुराने में संशोधन सहित, नवीन से जुड़े रहने का भाव है। गंगा किनारे खड़े व्यक्ति के सामने प्रतिपल जल बदलता है पर गंगा का प्रवाह सदियों पुराना है ऐसी ही संस्कृति की धारा है इसका 'गंगत्व' संरक्षणीय है, प्रवाह निरंतर रहे, स्वच्छ रहे। कोई प्रदूषण है, तो वह गंगा में मिलाया गया है, वह गंगा नहीं है, उसे शुद्ध करें। सही है कि बसंत आने के पूर्व पेड़ पत्ते बदलता है, पर आम के पेड़ पर आने वाले नए पत्ते भी आम के ही होते हैं। यह प्रकृति है, आम के पेड़ के पत्ते नवाचार के नाम पर जामुन के पत्ते नहीं बनाए जा सकते हैं। यदि कोई ऐसा करता है तो वह पेड़ न आम रहेगा न जामुन। हमारी संस्कृति भी ऐसी ही है। इसमें अन्य संस्कृति का अपमिश्रण नहीं होना चाहिए। परंपरा संस्कृति का अंग है उसे विकृति से दूर रखना चाहिए। नववर्ष हमें यही संकल्प लेने की प्रेरणा देता है।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- पक्का रंग -डॉ. सेवा नंदवाल ०५
- सुंदरी और बूढ़े काका... -डॉ. विमला भण्डारी ०८
- मोती की होली -चित्रेश २०

छोटी कहानी

- प्रकृति के प्रति -कन्हैया साहू 'अमित' २४
- होली है भाई -रन्दी सत्यनारायण राव २६
- निराशा के क्षणों में -पवित्रा अग्रवाल ३६
- गुढ़ी पड़वा -प्राजक्ता देशपाण्डे ४२

लोक कथा

- सबसे ताकतवर कौन? -विमला रस्तोगी ३८

प्रेरक प्रसंग

- मेरे तीन रिश्तेदार -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४३

बाल लेखनी

- परिवर्तन के पाँच दीप -साक्षी रोकड़े १०
- भरोसा -पावनी पांडे २५

नाटिका

- उपहार -पूर्णिमा मित्रा १८

आलेख

- हमारा वासन्ती पर्व : होलिकोत्सव -गोवर्द्धन शर्मा ४०

कविता

- होली गीत -रूद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' ०२
- होली है भाई होली है -उदय मेघवाल 'उदय' ३४
- होली के दिन आए -राजा चौरसिया ३७
- नए वर्ष जी -भगवती प्रसाद गौतम ५१

स्तंभ

- छ: अँगुल मुस्कान - १३
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १४
- आपकी पाती - २२
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३२
- पुस्तक परिचय - ४४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४६
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ४७

संस्थान विशेष

- राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला -डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे २८

बौद्धिक क्रीडा

- बौद्धिक व्यायाम -देवांशु वत्स ०७
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी २७
- पहेलियाँ -माणकचन्द गेहलोत ३४
- अनूठे सच -संकेत गोस्वामी ४५

चित्रकथा

- रंग मत लगाना -देवांशु वत्स ३१
- लाल बुझक्कड़ काका के...... -देवांशु वत्स ३५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

पक्का रंग

– डॉ. सेवा नन्दवाल

अध्यापक की अनुपस्थिति किसी भी कक्षा को रंगमंच में परिवर्तित कर देती है। उस कक्षा में भी अध्यापक के गैरहाजिर होने से स्वभावत: धमाचौकड़ी मची हुई थी। खूब शोरगुल था इतना कि एक दूसरे की बातें तक न सुनाई दें। कहाँ से आती है बच्चों के मन में इतनी बातें? शायद दस्तक दे रहा होली पर्व इसके मूल में था। अंशुल जी जैसे ही कक्षा में प्रकट हुए एकदम सब थम गया जैसे कुछ हुआ ही न हो। बच्चे शांत मुद्रा में खड़े होकर अभिवादन कर स्वांग भरने लगे।

अंशुल जी ने भृकुटि चढ़ाते पूछा– ''यह बताओ मेरे आने में थोड़े विलंब से यहाँ क्या हो रहा था?'' शिकायतों का दौर शुरू हुआ। कुश ने शुरूआत की– ''आचार्य जी! दक्ष बोल रहा था कि उसने केमिकल युक्त ऐसा पेंट तैयार किया है कि कई दिनों तक चेहरे से नहीं उतरेगा।'' भव्या बोली– ''हाँ आचार्य जी! हनी भी धौंस दे रही थी कि मैं तेरा चेहरा ऐसा बिगाड़ दूँगी कि कई दिनों तक किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहेगी।''

''मैं समझ गया। तुमने क्या इस होली पर्व को अपनी शैतानियों को प्रकट करने, अपनी भड़ास निकालने या दुश्मनी भुलाने का माध्यम समझ रखा है'' अंशुल जी ने प्रश्न किया– ''फिर आचार्यजी! कैसे मनाएँ?'' मिताली ने पलट कर पूछा।

''देखो बच्चो! विश्व में भारत ही एकमात्र देश है जिसके सारे पर्व–त्यौहार, पूजा–पाठ, चिंतन–दर्शन सब विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरे हैं। हमारे ऋषि–मुनियों ने विज्ञान के व धर्म का ताना–बाना बुना और इस ताने–बाने से निर्मित आवरण को त्यौहार–पर्व के नाम से समाज के अंग में प्रचलित कर दिया।'' अंशुल जी ने विस्तार से समझाने की चेष्टा की। आश्चर्य में डूबी हनी ने पूछ लिया।

''होली के पीछे क्या वैज्ञानिक कारण हो सकता है?'' अंशुल जी ने उत्तर दिया- ''वैदिक परंपरा में होलिका दहन के पीछे वैज्ञानिक कारण भी है। ऐसा माना जाता है कि धूप-कपूर की सुगंध वातावरण को शुद्ध करके वायु को दूषित होने से बचाती थी। इन्हीं के लघुकण ऊपर जाकर बादलों में संयुक्त होते और वर्षा के रूप में धरती पर गिरने वाला जल उपयोगी तत्वों से भरपूर होता था जिससे फसलें भी पौष्टिक बनतीं।''

''आचार्य जी! होली पर्व तो मौजमस्ती का है.....।'' अनुराग ने कहना चाहा। ''हाँ, शालीनतापूर्वक। अनुशासन में रहते मौजमस्ती का। होली पर्व है, प्रेम, उल्लास, उत्साह और उमंग का। इस पर्व की मूलभावना यही है कि चलो मिलकर खुशियाँ निर्मित करें, वितरित करें। एक-दूसरे को इन्हीं भावरंगों में रंगे। क्योंकि यही वह पक्का रंग है जो हमारे ऊपर चढ़कर कभी उतरता नहीं। बाकी सारे रंग तो समय के साथ फीके पड़ जाते या उतर जाते हैं। ऐसा करने से हमारी दुनिया और भविष्य दोनों रंगीन होंगे।'' अंशुल जी ने समझाया।

''आचार्य जी! हमारा सबसे बड़ा पर्व यही है न?'' मानस ने जिज्ञासा प्रकट की। ''हाँ, होली देश के चार प्रमुख सांस्कृतिक पर्वों में एक है। यद्यपि समय के साथ इस पर्व में विकृतियाँ आती गई हैं.... लेकिन तुम बच्चे अब भी उन पुरानी सारगर्भित परंपराओं को पुनर्जीवित कर सकते हो।'' अंशुल जी ने अपेक्षा प्रकट की। ''पुरानी परंपरा मतलब?'' कुश ने पूछा। ''एक बताता हूँ। बहुत पहले हमारे गाँवों में होलिका दहन के बाद, प्रत्येक घर के बाहर जाकर व्यक्तिगत संबोधन से आवाजें लगाकर बताते थे कि उस व्यक्ति ने विगत दिनों क्या अनुचित किया? समाज में उसके कदाचरण से उसकी क्या छबि निर्मित हुई। एक तरह से यह उस व्यक्ति के लिए सुधार की चेतावनी होती थी और अवसर भी।'' अंशुल जी ने स्पष्ट किया।

''आप चाहते हैं कि हम उस पुरानी परंपरा को जीवित करें?'' दक्ष ने पूछा। ''हाँ प्रयत्न करने में क्या हर्ज है? यह एक तरह को सर्जिकल स्ट्राइक होगी। होली 'रंगायन' तो हमेशा से रहा है लेकिन अब आवश्यकता है कि वह 'संस्कारायन' भी हो।'' अंशुल ने समझाया। ''आचार्य जी! आपने कहा है कि हम किसी के घर के बाहर से उसकी बुराइयों का बखान करें... ऐसे में अगर वे हमें पकड़कर पीटने लगे तो...?'' मानस ने शंका उठाई।

उसकी बात सुनकर सब हँस पड़े। ''हर नई शुरूआत कठिनाइयों से भरी होती है। अच्छा है इसकी शुरूआत अपने मोहल्ले से और समवयस्कों से करो।'' अंशुलजी ने सलाह दी। ''आचार्य जी! एक उदाहरण बताइए?'' पल ने पूछा। ''जैसे कोई मित्र झूठों का सरताज है तो उसका बखान करें। यदि वह बहाने मारने में विशेषज्ञ हैं तो उसकी चर्चा करें।'' अंशुल जी ने समझाया।

''इससे उसको बुरा नहीं लगेगा?'' हनी ने पूछा। ''बुरा तो लगेगा। इसलिए शालीनतापूर्वक बताएँ कि तुमने पिछले दिनों अमुक बुरे काम या आचरण किया और इससे तुम्हारी छबि को नुकसान पहुँच रहा है। यह छबि सुधारने का बहुत अच्छा अवसर है इसका लाभ उठाएँ।'' अंशुल जी ने कहा। ''ऐसा कहने से वे मान जाएँगे?'' भव्या ने प्रश्न उठाया। ''यदि उसमें जरा भी सकारात्मक भाव है। अच्छा बनने की चाहत और सपना है तो वह तुरंत इस अवसर का लाभ उठाते अपनी गलती स्वीकारते अपना मार्ग छोड़ देगा।'' अंशुल जी ने बताया।

''यदि फिर भी वह नहीं आया, नहीं माना तो?'' कुश ने जानना चाहा। ''तो फिर बहिष्कार से बड़ी कोई सजा नहीं होती। उसके अशुभ कृत्यों की सूची उसके दरवाजे पर चस्पा कर दें। लेकिन एक बात याद रखना... ये सारी गतिविधियाँ सम्मान-जनक ढंग से की जानी चाहिए, शुद्ध मानवीय धरातल

पर। होली पर्व आता ही इसलिए है कि हम अपने को समाज से जोड़ें, उसमें घुल मिल जाएँ।'' अंशुल जी ने समझाया।

''इससे उसको बुरा नहीं लगेगा?'' हनी ने पूछा। ''बुरा तो लगेगा। इसलिए शालीनतापूर्वक बताएँ कि तुमने पिछले दिनों अमुक बुरे काम या आचरण किया और इससे तुम्हारी छबि को नुकसान पहुँच रहा है। यह छबि सुधारने का बेहतरीन अवसर है इसका लाभ उठाएँ।'' अंशुल जी ने कहा। ''ऐसा कहने से वे मान जाएँगे?'' भव्या ने प्रश्न उठाया। ''यदि उसमें जरा भी सकारात्मक भाव है। अच्छा बनने की चाहत और सपना है तो वह तुरंत इस अवसर का लाभ उठाते अपनी गलती स्वीकारते अपना मार्ग छोड़ देगा।'' अंशुल जी ने बताया।

''यदि फिर भी वह नहीं आया, नहीं माना तो?'' कुश ने जानना चाहा। ''तो फिर बहिष्कार से बड़ी कोई सजा नहीं होती। उसके अशुभ कृत्यों की सूची उसके दरवाजे पर चस्पा कर दें। लेकिन एक बात याद रखना... ये सारी गतिविधियाँ सम्मान-जनक ढंग से की जानी चाहिए, शुद्ध मानवीय धरातल पर। होली पर्व आता ही इसलिए है कि हम अपने को समाज से जोड़ें, उसमें घुलमिल जाएँ।'' अंशुल जी ने समझाया।

''आचार्य जी! इस पर्व का संदेश क्या है?'' दक्ष ने पूछा। ''जिस तरह रंगों के इस पर्व पर अलग-अलग रंग एकाकार होते हैं उसी भाँति हमारी भिन्न-भिन्न संस्कृति के लोग एक साथ आकर उल्लास में सम्मिलित होकर एकता का परिचय दें। इस पर्व को राष्ट्रीय और सामाजिक पर्व में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए।'' अंशुल जी ने सार बताते हुए विद्यार्थियों से अपेक्षा प्रकट की।

– इन्दौर (म. प्र.)

दोस्तो, बता सकते हो कि डॉक्टर किटी कैट किन जानवरों का चेकअप करेंगी?

उत्तर– केवल बकरी और गाय का। हमारी तरह इन दोनों के भी बत्तीस दांत होते हैं।

सुन्दरी और बूढ़े काका की नाव

– डॉ. विमला भण्डारी

सुन्दरी को मोहल्ले वाले 'शामली' कहते थे– कारण एक बार प्लास्टिक की थैलियाँ और बोतल बीनते हुए वह शहर की गटर के खुले नाले में गिर गई थी और जब उसको बाहर निकाला गया तो वह पूरी तरह से कीचड़ से सनी हुई थी। एकदम काले रंग की, जैसे किसी ने कोलतार पोत दिया हो।

वैसे वो हमेशा नहाती, साफ कपड़े पहनती, बालों को गूंथकर उनमें रिबन लगाती और हर बात में 'थैंक यू' और 'सॉरी' कहती, लेकिन एक बार जो किसी ने उसका यह नाम रख दिया तो बस! तब से वह सुंदरी की जगह शामली बन गई थी।

मोहल्ले के बच्चे प्रतिदिन छुपम–छुपाई खेलते तो शामली कहकर ही पुकारते। साइकल दौड़ते तब भी इसी नाम से पुकारते। कोई उसे असली नाम से तो पुकारता ही नहीं था। सब उसका असली नाम भूल चुके थे यहाँ तक की उसके माता–पिता, भाई, बहन भी अब उसे शामली कहते थे। जब नल में पानी आने पर शुरू हो जाता मोहल्ले के बच्चों में पानी की बाल्टी से युद्ध और उसके बाद होता उनका एक दूसरे को भद्दी, गंदी गालियाँ देने का गाली–गलौज खेल। शामली को यह बहुत बुरा लगता, तब वह एक ऐसी जगह चली जाती जहाँ कोई नहीं जाता था।

जहाँ शामली चली जाती थी वह सुनसान स्थान था। झुग्गी–झोपड़ी मोहल्ले के पीछे पड़ी खाली पड़ी जमीन, जहाँ बरसात का पानी जमा हो गया था। बस! उसी के किनारे बैठ जाती और वहाँ पड़ी हुई एक टूटी–सी प्लॉस्टिक की नाव को देखा करती। बरसों से यह नाव ऐसे ही पड़ी थी। किसी ने उसे उठाया या बेचा ही नहीं था, क्योंकि यह नाव हरनाम काका की थी।

हरनाम काका वहीं पास के मकान में रहते थे। आयु ७० पार, मूँछें सफेद, आँखों पर मोटा चश्मा लगा था। हमेशा बच्चों पर खीजते नजर आते कहते– ''अब बच्चों में न तो सभ्यता रही, न ही छोटे–बड़े की समझ।''

बच्चे उन्हें देखकर चिढ़ाते, ''बूढ़े काका! बूढ़े काका!''

और काका गुस्से में झाड़ू उठाकर उन्हें मारने दौड़ते या परेशान होकर अपने घर के दरवाजे–खिड़की बंद कर लेते।

शामली अकेली ऐसी बच्ची थी जिसने उन्हें कभी नहीं चिढ़ाया। वह रोज वहाँ पानी की एक बोतल लेकर जाती। थोड़ी देर वहाँ खेलने के बाद बोतल का थोड़ा पानी उस नाव पर डालती। बस ऐसे ही, जैसे किसी पौधे को पानी देती हो। फिर टकटकी लगाए नाव को देखती रहती।

शामली को यह नाव बहुत पसंद थी। वो रोज आती और बोतल से पानी डालकर चुपचाप बैठ जाती। सोचती, ''काश, इसे ठीक करके कभी मैं भी इसे चलाऊँ....''

लेकिन हर बार कोई–न–कोई आकर उसे रोक देता, ''वहाँ मत जाओ, गंदा पानी है! काई जमी है! फिसलकर गिर जाओगी....''' या ''अरे वो तो बूढ़े काका की पुरानी नाव है, उन्हें पसंद नहीं कि कोई उसे छुए।''

एक दिन शाम के समय वह वहाँ बैठी थी, और चुपचाप नाव देख रही थी, तभी उसके पीछे से आवाज आई, ''सुन्दरी! उसमें कुछ नहीं है बेटा! केवल टूटी प्लॉस्टिक है।''

सुन्दरी ने पलटकर देखा, हरनाम काका खड़े थे। उनके हाथ में एक छोटी लकड़ी की कुर्सी थी। कुर्सी खोलकर वे धीरे से उस पर बैठ गए और बोले, ''ये नाव मैंने अपने पोते के लिए बनाई थी। लेकिन वह तो.... शहर चला गया।''

सुन्दरी की आँखें भर आयीं। कई दिनों बाद उसने अपना असली नाम सुना था। किसी ने उसके असली नाम 'सुंदरी' कहकर पुकारा था, परन्तु वह चुप रही। कुछ नहीं बोली।

उसे चुप देखकर हरनाम काका बोले– ''मैं तुम्हें हर रोज आते हुए देखता हूँ। तुम इस नाव पर पानी क्यों डालती हो ?''

सुन्दरी के कहने के लिए होंठ खोले किन्तु थोड़ा सकुचाते हुए कहने लगी, ''मुझे लगता है... ये नाव उदास है... मेरी तरह। मैं जब इसे देखती हूँ तो सोचती हूँ कि ये पानी में तैर सकती है।''

''ओहो! तुम भी मेरी तरह सपना देखते हो ? क्या देखते हो ?'' हरनाम काका ने पूछा।

''मैं सपना देखती हूँ कि मैं और ये नाव साथ चल रहे हैं, कहीं दूर। इसी बस्ती से दूर... जहाँ मुझे सब मेरे असली नाम से पुकारे।''

काका थोड़ी देर चुप रहे। फिर बोले, ''सपने देखना अच्छा होता है.... और उन्हें पूरा करना उससे भी अच्छा। चलो, इसे ठीक करते हैं सुन्दरी ?''

सुन्दरी की आँखें चमक उठीं, जैसे उसे कोई मिशन मिल गया हो, हाँ मिशन ही तो था। नाव की मरम्मत का मिशन। अगले दिन सुन्दरी और हरनाम काका दोनों जुट गए थे नाव की मरम्मत करने में।

पहले नाव के प्लास्टिक को गर्म पानी से धोया फिर टूटे भाग में गोंद और टेप से मरम्मत की। नाव को चलाने के लिए पतवार के लिए पुरानी झाड़ू की लकड़ी काटी गई, तब जाकर कहीं नाव तैयार हुई। दोनों ने मिलकर नाव का नाम रखा, 'सपना'। चमचमाती नाव को मोहल्ले के बच्चों ने भी देखा। चमकती नाव देख सारे बच्चे उत्साहित हो गए। ''सुन्दरी और बूढ़े काका की नाव!'' अब मोहल्ले में उसका यही नाम पड़ गया।

शनिवार की शाम, सब बच्चों की उपस्थित में

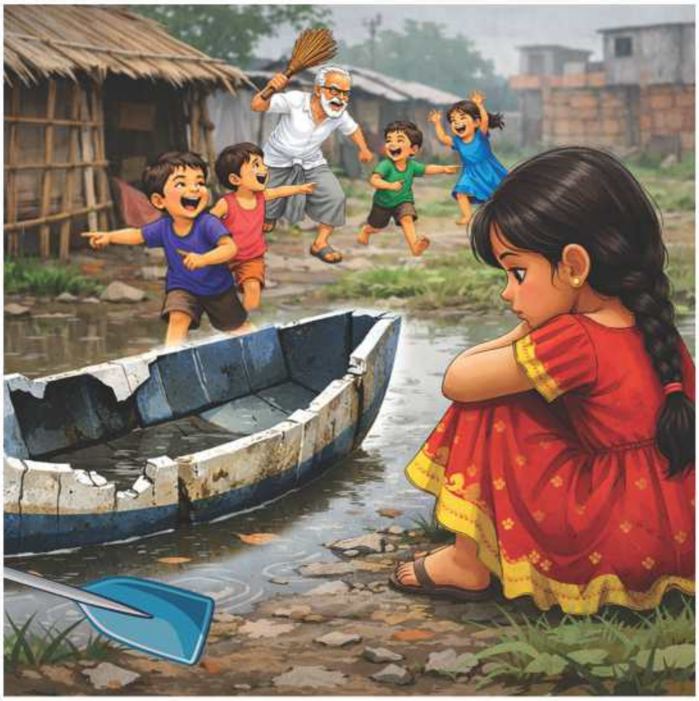

नाव को पानी में उतारा गया। सुन्दरी उसमें बैठी और हरनाम काका ने धीरे से धक्का दिया।

नाव चली... सचमुच में चली! बच्चे चिल्लाए, ''सुन्दरी की नाव चल गई!'' किसी ने कहा– ''बूढ़े काका का रॉकेट चल पड़ा!'' यह सुन शायद बरसों बाद काका मुस्कराए। अब सुन्दरी रोज बच्चों को नाव की सवारी कराती। हरनाम काका उनके लिए नाव से जुड़ी मजेदार कहानियाँ सुनाते। पुराने किस्से बताते, कैसे पहले लोग नहीं में लकड़ी की नाव चलाते थे, कैसे नावों पर चिट्ठियाँ भेजी जाती थीं ? बच्चों ने भी अब उन्हें ''बूढ़ा काका'' कहना बंद कर दिया। अब वे सब उन्हें प्यार से कहते, ''नाव वाले काका'' और शामली फिर से सुंदरी बन गई अब उसे कोई भी शामली कहकर नहीं पुकारता। अब तो वह मोहल्ले की राजकुमारी सुन्दरी नहीं थी, वह बन गई थी सपनों की कप्तान। बच्चे अब लड़ते–झगड़ते या गाली–गलौज नहीं करते थे। वे अब नाव में बैठकर सैर करते थे और मौज करते थे।

– सलुम्बर (राजस्थान)

परिवर्तन के पाँच दीप

– साक्षी रोकड़े कक्षा १२वीं

पात्र विवरण

सूत्रधार–
स्वदा–
कर्त्तव्या–
वन्या–
कुलमंजरी–
माँ–
बेटी–
दुकानदार–
अन्य कलाकार– ०५

(पृष्ठ भूमि में हल्का संगीत, सभी धीरे–धीरे प्रवेश करते हैं।)

सभी– हम लेकर आए संदेश नया,
परिवर्तन का दीप जला।
राष्ट्र हमारे हाथ में है,
जो अंधेरा है– वहीं चलो उजियारा जला
उम्मीदों की लौ फिर से जगती,
पाँच दीपशिखाएँ आगे बढ़ती

दृश्य–१ (प्रकाश मंद होता है।)

सूत्रधार–
आओ सुनो परिवर्तन की कहानी
पाँच दीपशिखाएँ– पाँच दिशा–दर्शनी निशानी।
जब व्यक्ति बदले– तो समाज बदले।
जब समाज बदले– तो राष्ट्र बदलता है।
ये पाँच दीपशिखाएँ आज बताने आई हैं
कि शक्ति बाहर नहीं भीतर बसती है।

(पाँचों पात्र मंच के अलग–अलग कोनों से प्रवेश करती हैं।)

स्वदा– मैं स्वदा– स्वदेशी की आवाज।
मिट्टी की खुशबू, गाँव की पहचान,
कला–कौशल–ये ही मेरे गहने।
जो अपना है– वही स्थायी है।
मैं याद दिलाती हूँ– जड़ों से कटोगे, तो सूख जाओगे!

कर्त्तव्या– मैं कर्त्तव्या–कर्त्तव्य का दीप।
लोग कहते हैं देश बदले–
पर बदलना पहले स्वयं को पड़ता।
सड़क साफ कौन करें ?
नियम कौन माने ?
देश का भविष्य कौन सँभाले ?
नागरिक! और हम सब नागरिक हैं।

वन्या– मैं वन्या–धरती की साँस।
हवा की हर ताजगी में,
पेड़ की हर छाँव में,
नदी की हर लहर में–मैं बसती हूँ।
जब–जब प्रकृति रोती है– मनुष्य रोने को मजबूर हो जाता है।

साम्या– मैं साम्या– समरसता की कली।
जात–पात, भाषा–भेद, मोहल्ला–भेद
ये सब दीवारें इंसानों ने खुद बनाई हैं।
मैं कहती हूँ–हिंदू से हमारी कोई पहचान नहीं।

कुल मंजरी– मैं कुल मंजरी–परिवार का उजियारा।
डोर अगर घर में टूटी–तो बाहर दुनिया में कुछ नहीं बचेगा।
परिवार मजबूत–तो राष्ट्र मजबूत।

(दृश्य परिवर्तन)

(भीड़ मंच पर आती है– कचरा फेंका जा रहा है, पेड़ काटने की आवाज, बच्चे मोबाइल में खोए हुए, झगड़ा, विदेशी खिलौनों की होड़।)

सूत्रधार (दर्द से)– ये है हमारे समय का दर्पण

जहाँ पाँचों दीप कमजोर पड़ते दिखते हैं।

पर सवाल है– क्या इन्हें फिर प्रज्वलित किया जा सकता है?

दृश्य २–

१ स्वदेशी का संघर्ष

(दुकानदार विदेशी खिलौने बेचते हुए।)

दुकानदार– अरे बच्चो! ये देखो–विदेश से आया रोबोट! चमकता है, बोलता है, नाचता भी है!

(बच्चे प्रसन्न होकर लेने जाते हैं)

स्वदा (तेज, रोकते हुए)– एक मिनट

चमक से सब कुछ नहीं बदलता।

ये चीज टूटेगी–फेंकी जाएगी।

पर गाँव की मेहनत?

गाँव की कला?

देश की अर्थव्यवस्था?

वे सब टूट रही हैं!

दुकानदार– तो क्या करें बिटिया? बच्चे तो विदेश का ही माँगते हैं।

स्वदा– माँग वही है जो हम दिखाते हैं।

अगर हम स्वदेशी को सम्मान देंगे– तो पीढ़ियाँ सीखेंगी।

चलो–आज से एक वादा करें।

स्वदेशी अपनाएँ– देश की जड़ें मजबूत बनाएँ।

सभी– स्वदेशी अपनाएँ– देश की जड़ें मजबूत बनाएँ।

२. नागरिक कर्त्तव्य

(एक लड़की कचरा फेंकती है)

कर्त्तव्या– बहना! ये क्या?

देश को साफ कौन रखेगा?

लड़की– अरे दीदी, काम तो सरकार का है।

कर्त्तव्या (कड़ाई से)– नहीं! सरकार बड़े काम करती है–

पर रोज के काम नागरिक ही करते हैं।
अगर हर नागरिक अपना कर्त्तव्य निभाए–
तो देश को बदलने में एक दिन भी नहीं लगेगा।
(दूसरी लड़की लाल बत्ती तोड़कर भागती है)

कर्त्तव्या (उसे रोककर)– नियम केवल डराने के लिए नहीं,
बचाने के लिए बनाए जाते हैं!
जीवन की सुरक्षा–आपके नियम पालन में है।
कर लो वादा?
भीड़– कर्त्तव्य पहले– फिर अधिकार!

३. पर्यावरण संकट

(दो लोग आरी लेकर पेड़ काटने जाते हैं)

वन्या (लगभग रोते स्वर में)– ठहरो! मत काटो धरती की गोद!
पेड़ केवल लकड़ी नहीं–
वो हवा हैं वो बारिश हैं वो जीवन हैं।
लड़की– पर बहन, हमें घर बनाना है।
वन्या (शांत कराते हुए)– घर बनाओ– पर पेड़ भी लगाओ।
किसी एक की कीमत पर दूसरे को मत मिटाओ।
धरती हमें रोज देती है–
हम भी उसे कुछ तो लौटाएँ!
(भीड़ पेड़ लगाने का अभिनय करती है)
सभी–पेड़ बचाएँ–धरती सजाएँ!

४ सामाजिक समरसता

(दो लड़कियाँ झगड़ रही हैं)

लड़की–१– तुम अलग जाति की हो– हमारे साथ मत खेलो!
लड़की–२ (आँखों में आँसू)– क्या जाति ही इंसानियत तय करता है?
(साम्या दोनों के बीच आती है)

साम्या– नहीं बहनो!
ये देश जाति पंथ से नहीं–दिलों से बनता है।
जो जोड़ता है–वही महान।
जो तोड़ता है–वही कमजोर।
(दोनों का हाथ मिलवाती है)
समर– भेद मिटेगा–तो प्रेम पनपेगा।
प्रेम पनपेगा– तो राष्ट्र मुस्कुराएगा।
गर्व से कहो हम हिंदू है।
सभी– हमारी जाति एक है धर्म एक है हिंदू

५ कुटुंब प्रबोधन

(माँ! मोबाइल में, बेटी बार–बार आवाज दे रही है।
बेटी– माँ मेरी बात सुन लो
माँ एक मिनट
माँ (चिढ़कर)– बेटा बाद में! बहुत काम है।
(बेटी उदास बैठ जाती है)
कुल मंजरी (धीरे, भावुक)– यही बाद में
कई रिश्तों में दूरी बन जाता है।
मोबाइल का उजाला–
घर के उजाले को मत निगलने दो।
१० मिनट की हँसी–
१० घंटे के तनाव को मिटा देती है।
परिवार समय माँगता है–
और लौटकर कई गुना देता है।
बड़ों का सम्मान और छोटे को स्नेह
यही अच्छे परिवार कुटुम्ब की निशानी
(माँ–बेटी गले मिलती हैं)
सब– मजबूत परिवार–मजबूत राष्ट्र!
पाँचों पात्र एक साथ मंच के केंद्र में आते हैं
स्वदा– अकेले में हम पाँच–बस पाँच रोशनी।
कर्त्तव्या– पर साथ में हम–एक सूरज!
वन्या– धरती–आकाश–हवा–सब बदल सकता है।

साम्या– यदि मन बदल जाए तो।

कुल मंजरी– राष्ट्र जग उठता है।

दृश्य ३ – पंचदीपों का संगम और समाधान

(मंच पर उजला प्रकाश। भीड़ अब अच्छा व्यवहार करने लगती है– कचरा उठाना, पेड़ लगाना, झगड़ा रोकना, स्वदेशी खरीदना, परिवार में प्रेम दिखाना।)

सूत्रधार (उत्साहपूर्ण)

जब स्वदेशी की शक्ति जागे,
कर्त्तव्य को चेतना भागे,
प्रकृति मुस्कुराने लगे,
समरसता रंग जमाने लगे,
और परिवार प्रेम से खिल जाए–
तब बनता है नया भारत!
शक्तिशाली और संस्कारित भारत!

(पाँचों दीपशिखाएँ हाथ में प्रतीकात्मक दीप उठाती हैं)

स्वदा– स्वदेशी–आत्मबल जागाए!

कर्त्तव्या– कर्त्तव्य–देशरूप सजाए!

वन्या– पर्यावरण बचाएँ–जीवन लाएँ!

साम्या– समरसता–दिल मिलवाएँ!

कुल मंजिरी– कुटुंब–संस्कार फैलाएँ!

सभी मिलकर ऊँची आवाज में
पाँच दीप–एक अभियान!
मिलकर बनाते–राष्ट्र महान!

(ढोलक की शक्तिशाली अंतिम थाप–सभी प्रणाम करती हैं)

– भोपाल (म. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

पागल खाने में पागल नाच रहे थे। एक पागल खामोश बैठा था।

डॉक्टर(पागल से)– तुम खामोश क्यों बैठे हो?

पागल (डॉक्टर से)– बेवकूफ! मैं दूल्हा हूँ।

*****

पत्नी (पति से)– उठो रात के दो बज गए।

पति (पत्नी से)– इतनी रात को क्यों उठाया।

पत्नी– आप आज नींद की गोली खाना भूल गए थे।

*****

मास्टर जी– विज्ञान में इतनी ताकत है जो आदमी को जानवर बना दे।

छात्र– मास्टर जी। वह ताकत तो आप में भी है जो आप हमें मुर्गा बना देते हैं।

*****

करतब करता हुआ एक व्यक्ति बोला, अब मैं इस ऊँचे मीनार से छलांग लगाऊँगा। लेकिन नीचे नहीं आऊँगा।

एक दर्शक– यह तो मैं भी जानता हूँ। कि वह से कूदने के बाद तुम नीचे नहीं ऊपर ही जाओगे।

*****

अध्यापक– 'मुँह में पानी आना' मुहावरा का वाक्य बनाओ।

बच्चा– जब मैंने नल में नीचे मुँह किया तो मेरे मुँह में पानी आ गया।

बाल साहित्य के अर्जुन : विष्णुकांत पांडेय

– प्रस्तोता–डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

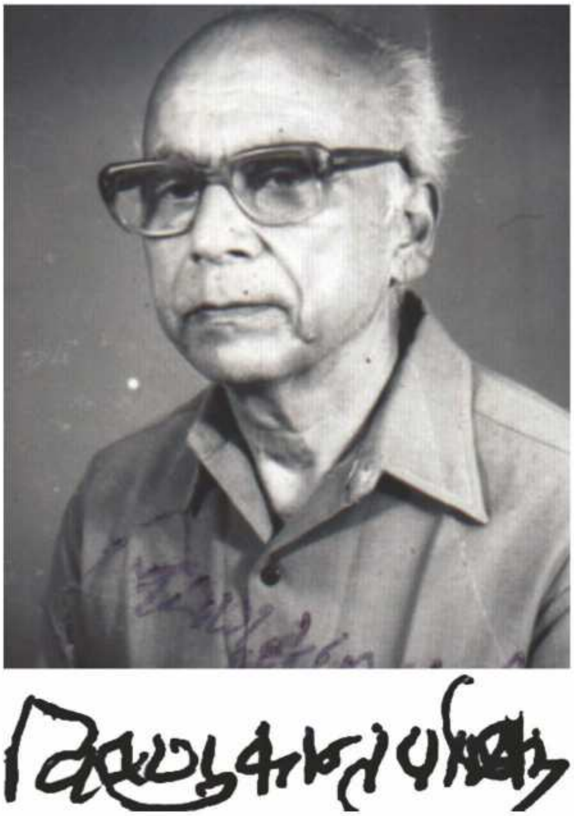

विष्णुकांत पांडेय एकनिष्ठ भाव से बाल साहित्य के लिए समर्पित थे। बाल साहित्य की विविध विधाओं में प्रचुर लेखन के अतिरिक्त उन्होंने उसकी समीक्षा को भी समृद्ध किया। 'परिकल्पना' पत्रिका के माध्यम से बाल साहित्य को एक आन्दोलन का रूप दिया। बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ने के लिए 'बच्चों की कुटिया' की स्थापना की।

विष्णुकांत पांडेय का जन्म ०७ मई १९३३ को बिहार के संग्रामपुर (पूर्वी चम्पारण) में हुआ था। उनके पिता रामभवन पांडेय अत्यंत सरल, सहज और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। जिसकी छाप विष्णुकान्त जी पर भी पड़ी। बाल साहित्य में उनकी छवि अत्यंत निर्भीक और दो टूक शब्दों में अपनी बात कहने वाले लेखकों में शुमार थी। पांडेय जी ने जीविका के लिए शिक्षा का क्षेत्र चुना और एक शिक्षक से विद्यालय निरीक्षक के पद तक पहुँचे। आजीवन उन्होंने बाल शिक्षा और बाल साहित्य के मध्य एक सेतु की तरह कार्य किया।

बाल साहित्य के आदि समीक्षक निरंकारदेव सेवक उन्हें बाल साहित्य का अर्जुन कहते थे। उनकी पहली रचना एक निबंध थी जो पटना से प्रकाशित पाटल पत्रिका में १९५५३ में छपी उन्होंने १९५६ में चर्चित बाल पत्रिका 'बाल सखा' में एक पद्यकथा के माध्यम से बाल साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उन्होंने बाल साहित्य की सभी विधाओं में सृजन किया। उनके लिखे शिशुगीतों की तुलना विश्व के श्रेष्ठ शिशुगीतों से की जा सकती है। उन्होंने बहुत लिखा जो परिणाम और परिणाम दोनों ही दृष्टि से अद्‌भुत है। बाल साहित्य की उनकी प्रमुख कृतियों की सूची अत्यंत विस्तृत है–

शिशुगीत संग्रह– लो ये प्यारे–प्यारे गीत, सब गीतों से न्यारे गीत, सारे गीत तुम्हारे गीत, मीठे–मीठे प्यारे गीत, गाता चल मुसकाता चल, हँसता और हँसाता चल, गाता चल दुहराता चल, अटपट गीत सुनाता चल, रचना सुनो सुनाओ गीत, गाओ गीत बनाओ गीत, मैना सुने सुनाये तोता, अगर कहीं मैं चिड़िया होता, नन्हें साथी नन्हें गीत, नन्हें गीत सुगम संगीत, नन्हा मुन्ना गाये गीत, मुन्नी के मन भाये गीत, आभा–नानी–रेखा गायें, रवि–मनोज–शशि सुनें–सुनायें, सुधा–विभा हँसें–हँसायें, रचना–कविता नाचें–गायें, वीणा गाये हँसे विनोद, रेखा–शशि–रागिनी–प्रमोद, रेखा–रचना गायें गीत, मुन्नी सुने–सुनाये गीत, मेरे प्यारे–प्यारे शिशु गीत।

बालगीत–संग्रह– चन्दा–तारे, गीत हमारे, खेलें–कूदें–गायें, आगे कदम बढ़ाएँ आओ गीत

सुनाएँ, जगमग दीप जलाएँ, ये रंग–बिरंगे फूल, कुछ पत्ते कुछ फूल, गाँव के बच्चे की पाती, धरती हँसती–गाती, प्यारे–प्यारे गीत हमारे, धरती–सूरज–चाँद–सितारे, हम भारत माँ के नौनिहाल, तुम चलो न उल्टी चाल, कैसे वर्षा आई? क्यों बिजली मुसकाई?, पाती आती–जाती, माँ, ये कौन?, नन्हों का संसार, कल के पहरेदार, मेरे प्यारे–प्यारे बाल गीत।

आपने **बाल खण्डकाव्य** भी लिखे।

पद्य कथाएँ– आओ सुनो कहानी, ना राजा, ना रानी, ये मिस्टर लंगूर, खट्टे हैं अँगूर।

किशोर गीत–संग्रह– सीमाएँ उन्मुक्त गगन, देश की मिट्टी तुझे नमन।

बाल कहानी संग्रह– चोर और साधु, सीत–बसन्त, नन्हा सिपाही, नन्हें–नन्हें राही, सरल बाल कहानियाँ, सरस बाल कहानियाँ, सुगम बाल कहानियाँ, सुलभ बाल कहानियाँ, मनोरंजक बाल कहानियाँ, सीख की कहानियाँ, नन्हा चूजा चुनचुन, लो, फिर सुनो, ऐतिहासिक कथाएँ, भौगोलिक कथाएँ, सामाजिक कथाएँ, वैज्ञानिक कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, लोक कथाएँ, वे जो महान बन गये, बिहार की सांस्कृतिक विभूतियाँ, कलरव, किलकारियाँ, कल्लोल, मेरी बाल कहानियाँ, मेरी बाल कथाएँ।

बाल उपन्यास– जंगल में मंगल, नन्दू का सपना, वे साहस के पुतले, मेरे प्यारे बाल उपन्यास।

बाल निबन्ध– भारत विभिन्नताओं में एकता का प्रतीक, हिमालय की कहानी हिमालय की जुबानी।

उन्होंने समीक्षा ग्रन्थ 'बाल साहित्य विवेचन' भी लिखा, जिसकी पाण्डुलिपि बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से पुरस्कृत हुई थी दुर्भाग्य, कि उसका प्रकाशन नहीं हो सका पांडेय जी ने 'परिकल्पना' पत्रिका के विशेषांकों के माध्यम से बाल साहित्य आलोचना की नींव पुख्ता की १५ अगस्त १९६९ को इसका प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था।

जीवन के अंतिम दिनों में भी बच्चों से उनका जुड़ाव बना रहा। उन्होंने मोतीहारी में 'बच्चों की कुटियाँ' की स्थापना की थी जिसमें ढेर सारे बच्चे एकत्रित होकर बाल साहित्य का रसास्वादन करते थे। कुटिया में उनकी ये पंक्तियाँ बच्चों का स्वागत करती थीं। बाबाजी की कुटिया प्यारी, कुटिया में तस्वीर तुम्हारी २२ सितम्बर २००२ को मोतीहारी में ही उनका निधन हो गया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भी उन्हें आचार्य कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान और बाल साहित्य भारती सम्मान से सम्मानित किया था।

आइए, उनकी कुछ विशिष्ट बाल रचनाओं का आनंद लेते हैं–

टहल चलें

घोंघा निकला पानी से,
मिला राह में नानी से।
नानी बोली–''किधर चले?
घर से तुम कैसे निकले?''

घोंघा बोला नानी से–
''ऊब गया मन पानी से।
चलो कहीं बाहर निकलें,
खुली हवा में टहल चलें।''

आई धूप

सुबह-सुबह जो आई धूप,
शिखर-शिखर मुस्काई धूप
बिखर-बिखर कर छप्पर-छत पर,
धरती पर मुसकाई धूप।

झाड़ी-झुरमुट मैदानों में,
खेत-रेत में खलिहानों में।
डाली-डाली पर रुक-रुक कर,
थकी-थकी सुस्ताई धूप।

फूल-फूल में, कली-कली में,
धीरे-धीरे गली-गली में।
जाने कब खिड़की पर उतरी,
घर में घुसी, लजाई धूप।

ऊँची चोटी गहरा कूप,
पीली पर चमकीली धूप।
तिनके-तिनके में छा जाती,
ललचाई ललचाई धूप।

जाड़े में मन भाई धूप,
गरमी में गरमाई धूप
तपती रहती, तन झुलसाती,
वर्षा में शरमाई धूप।

सूरज निकला, आई धूप,
दिनभर राम दुहाई धूप
शाम हुई तो गयी कहीं जी,
अलसाई-अलसाई धूप।

दैया-दैया

घोड़ा नाचे, हाथी नाचे,
नाचे सोन चिरैया,
किलक-किलक कर बंदर नाचे,
भालू ता-ता थैया।
ठुमक ठुमक कर खरहा नाचे,
ऊँट, मेमना, गैया
आ पहुँचा जब शेर नाचने,
मची हाय रे दैया।

उत्सव

उत्सव था गणतंत्र दिवस का,
खूब लगी थी होड़
गीदड़ जी ने कुश्ती जीती,
कछुआ जी ने दौड़
जैसे ही हाथी जी आए
और लगाई जंप
कहकर बन्दर जी यों भागे
यह कैसा भूकंप

सुनिए थानेदार

फोन उठाकर कुत्ता बोला
सुनिए थानेदार।
घर में चोर घुसे हैं,
बाहर सोया पहरेदार।
मेरे मालिक डर के मारे,
छिप बैठे चुपचाप।
मुझको भी अब डर लगता है,
जल्दी आएँ आप।

जरा पिला दो पानी

चींटी ने वह चाँटा मारा,
गिरा उलटकर हाथी।
सरपट भागे गदहे-घोड़े,
भागे सारे साथी।
धूल झाड़कर हाथी बोला-
माफ करो है रानी।
अब न कभी लड़ने आऊँगा,
जरा पिला दो पानी।

उल्टा अखबार

गदहे ने अखबार उलटकर,
नजर एक दौड़ाई।
बोला-गाड़ी उलट गई है,
गजब हो गया भाई।
बंदर हँसकर बोला-देखो
उल्टा है अखबार।
इसीलिए उल्टी दिखती है,
सीधी मोटरकार।

- शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

उपहार

– पूर्णिमा मित्रा

सूत्रधार– १२ वर्ष का बालक

ईश्वरचन्द्र– ९–१० वर्ष का बालक

भगवती देवी– ३० वर्ष की महिला

भिखारिन– ५०–५५ वर्ष की महिला

(पर्दा खुलता है। मंच में सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार– नमस्कार बंधुओ! आज मैं एक ऐसे महापुरुष के जीवन के झलकी दिखाता हूँ। जिसने अपने नाम और अपनी उपाधि को पूर्ण साकार किया।

बेहद गरीबी और अभावों में पलकर वे एक मेधावी विद्यार्थी बने। जिसके कारण उन्हें विद्यासागर की उपाधि दी गई। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में प्राचार्य का पद संभालते ही उसमें सभी जाति के छात्रों के लिए प्रवेश का नियम बनाया। विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दिलाने के लिए अपने प्राणों की परवाह न की। चलिए हम सब देखते हैं। कैसा था उनका बचपन।

(पर्दा गिर जाता है।)

(चंद पलों बाद फिर से पर्दा उठते ही मंच में रोशनी होती है। मंच में एक पलंग बिछा है। उस पर एक महिला लेटी हुई दिखाई देती है। एक बालक उनके पांव दबा रहा है। इतने में बाहर से करुण स्वर सुनाई देता है।)

भिखारिन– कुछ खाने को दे दो माँ। मैंने कुछ दिन से कुछ खाया नहीं है। बड़ी भूख लगी है। भगवती देवी–बेटा ईश्वर, मेरे पाँव दबाना छोड़। मैं बूढ़ी माँ को खाने के लिए कुछ लेकर आती हूँ।

(ईश्वर उनके पैर छोड़ देता है।)

(भगवती देवी भीतर से पके हुए चावल लाती है। ईश्वर दरवाजा खोल देता है। भिखारिन भीतर आ जाती है।)

भिखारिन– भगवान तुम्हारा भला करें। (अपना भिक्षापात्र आगे कर देती है।)

भगवती देवी (सकुचाते हुए भिक्षापात्र में भोजन डालते हुए) – बस यही भात बचा है।

ईश्वर (खड़ा होकर) – इससे क्या होगा माँ?

भगवती देवी– घर की आर्थिक अवस्था तो जानता है बेटा! मेरे पास और कुछ देने को नहीं है।

ईश्वर– क्यों नहीं है? तुम्हारे हाथों में सोने के ये कंगन है ना। इसे बूढ़ी माँ को दे दो।

भगवती देवी– हाँ! बेटा। (कंगन उतार कर भिखारिन को दे देती है।)

भिखारिन– जुग जुग जीयो बेटा। तुम माँ–बेटे का नाम अमर रहे।

ईश्वर– माँ चिंता मत करो। जब मैं बड़ा हो

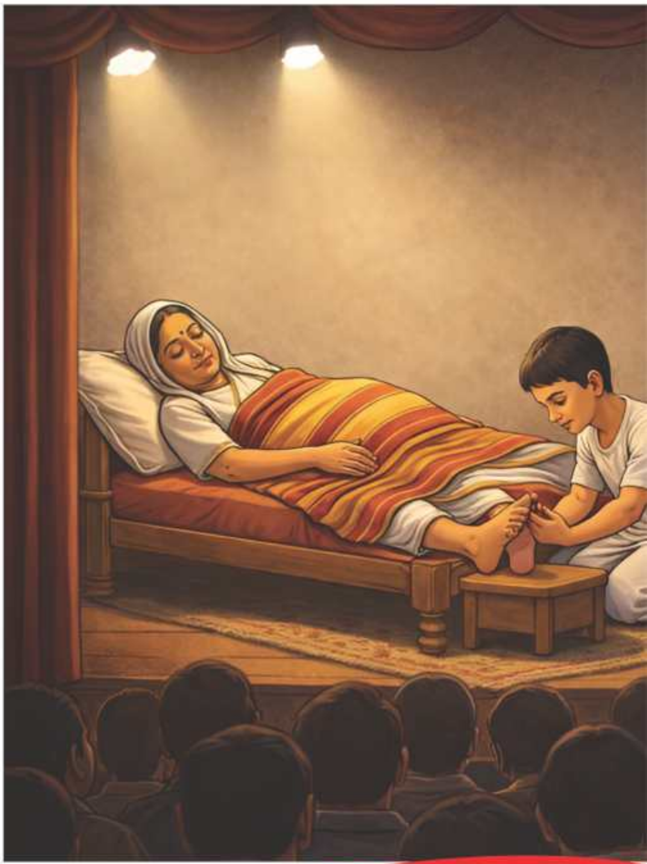

जाऊँगा। कमाने लगूँगा तो तुम्हें सोने के बहुत सारे गहने गढ़वा दूँगा।

भगवती देवी– मुझे तो बस तीन गहने उपहार में चाहिए।

ईश्वर (खुश होकर)– कौन–कौनसे गहने माँ?

भगवती देवी–पहला उपहार है इस वीर सिंह ग्राम में अनाथ बच्चों और असहाय स्त्रियों के रहने–खाने–पीने की व्यवस्था।

दूसरा उपहार है इस ग्राम में बच्चों की पढ़ाई के लिए स्कूल की व्यवस्था। तीसरा है बीमार लोगों के चिकित्सालय खोलना। कर सकेगा बेटा तू इतना सब?

ईश्वर– क्यों नहीं माँ! अवश्य करूँगा। (कहकर माँ के पैर छू लेता है।)

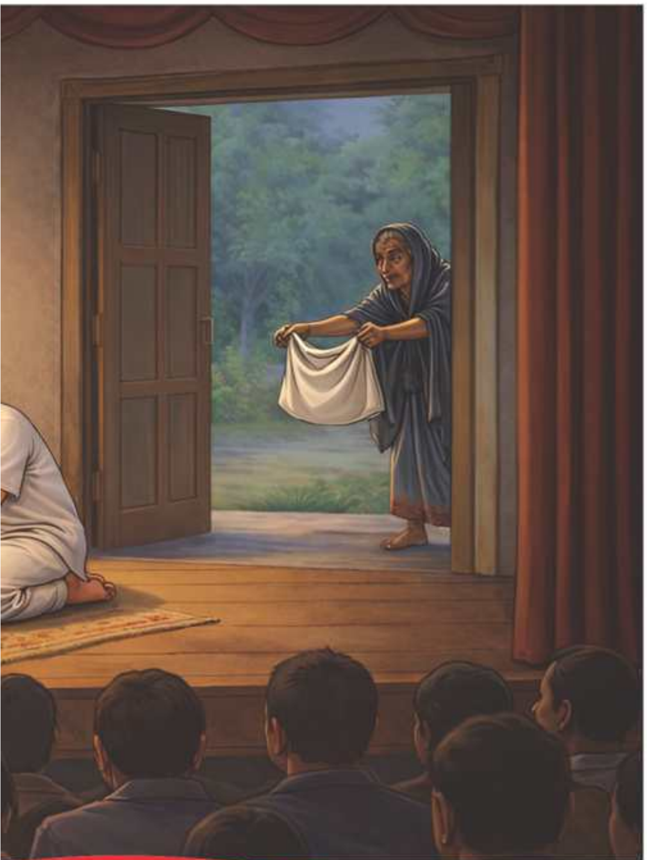

(मंच पर अंधेरा हो जाता है। सूत्रधार का प्रवेश। उस पर प्रकाश का वृत्त केन्द्रित हो जाता है।)

सूत्रधार– आगे चलकर यही बालक ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जिसने अपनी माँ को दिए वचन का पालन किया। दर्जनों विद्यालय खोले। अनेक अनाथाश्रमों को दान दिया। अनेक अनाथों व विधवाओं का भरण–पोषण किया। स्वयं दीन–दुखियों आदिवासियों की वर्षों चिकित्सा की। गाँव में चिकित्सालय खुलवाया।

(पर्दा गिर जाता है।)

– बीकानेर (राजस्थान)

कविता

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

वे समाज सेवक, सुधी, सज्जनता के धाम।
परोपकारी जागरूक, पुनर्जागरण काम।।
दर्शन, शिक्षाशास्त्र विद्
किया समाजोद्धार।
ऐसे ईश्वरचन्द्र जी,
बारम्बार प्रणाम।।

मोती की होली

– चित्रेश

मोती वर्मा जी का पालतू पिल्ला था। बड़े–बड़े नर्म बालों वाला एक वर्ष का गोल–मटोल नन्हा मोती बड़ा ही सुन्दर था। वर्मा जी का लड़का विमल रोज विद्यालय से लौटने के बाद उसे लेकर बगीचे में जाता था। वहाँ विमल के मित्र उसके साथ खेलते थे।

शाम को मोती विमल के पीछे–पीछे घर लौटता। विमल की छोटी बहन रानी दरवाजे पर खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही होती। मोती दौड़कर रानी के पास पहुँच जाता। वह उसे गोद में लेकर प्यार करती और खाने के लिए नमकीन बिस्कुट और पीने के लिए दूध देती। मगर एक दिन जब मोती पार्क से लौटा तो रानी दरवाजे पर न दिखी।

वह रानी को खोजता हुआ आँगन में पहुँचा। तभी उसकी निगाह बिल्ली के एक बच्चे पर पड़ी। वह आराम से बैठा कटोरे में रखा दूध चट कर रहा था। मोती को गुस्सा आ गया, बिल्ली के बच्चे की यह मजाल कि उसके सामने मालिक को नुकसान पहुँचाए। वह गुर्राता हुआ टूट पड़ा उस पर। इस बीच विमल और रानी भी आँगन में आ गए थे। उनके रोकने पर भी बिल्ली के बच्चे को एक पटकनी दे ही दी उसने, और भौंकता–गुर्राता हुआ उसे दूर तक खदेड़ आया।

मोती खुशी से उछलता हुआ घर लौटा–उसने सोच रखा था, घर में सब मेरी बहादुरी से प्रसन्न होंगे। मुझे ढेर सारा प्यार मिलेगा, पर हुआ उल्टा। मोती की इस हरकत के लिए उसकी हो गयी पिटाई। क्योंकि बिल्ली का वह बच्चा रानी ने पालने के लिए मँगवाया था और उसे भगा देने के लिए सभी उससे नाराज थे। मोती को जब असलियत का पता चला तो उसे बड़ा पछतावा हुआ। मगर गलती हो चुकी थी, अब क्या किया जा सकता था? हाँ, भविष्य के लिए वह सावधान हो गया कि अब बिना अच्छी तरह सोचे–समझे कोई काम नहीं करना है। किन्तु एक महीना भी बीता नहीं कि दूसरी गलती हो गई।

उस दिन शाम को पार्क से लौटकर वह खा–पीकर आराम कर रहा था, सुस्ती से उसकी आँखें मुंदी जा रही थीं, मगर अचानक ही उसे चौकन्ना हो जाना पड़ा, उसकी सुस्ती दूर भाग गई और वह झटपट खड़ा हो गया। उसके कान तन गए और पूँछ ऐंठकर पीठ से लग गई। उसे लगा कि अन्दर वाले कमरे में घुसकर कोई कुत्ता भौंक रहा है।

अगले पल वह अन्दर वाले कमरे में पहुँच गया। वहाँ विमल और रानी अगल–बगल कुर्सियाँ डाले बैठे थे। सामने लगे शीशे के पीछे बैठा एक काला कलूटा कुत्ता विमल और रानी को घूरता हुआ भौंके जा रहा था। मोती के लिए यह असहनीय था, उसने गुस्साकर छलांग लगाई और गुर्राता हुआ पहुँच गया डिब्बे वाली मेज पर। वह डिब्बे वाले कुत्ते पर झपटना ही चाहता था कि विमल ने उसे पकड़कर नीचे फेंक दिया, साथ ही दो–तीन थप्पड़ मारकर कहा– ''क्यों रे मोती! तुझे हो क्या जाता है ? जो बिना सोचे–समझे मूर्खता करने लगता है। अभी कर देता नये टेलीविजन का कबाड़ा।''

इस बार सही बात का पता चलते ही मोती का शर्म से बुरा हाल हो गया। वह मुँह चुराकर कमरे से

बाहर आया और अनजान रास्ते पर चल पड़ा। इस समय रात होने लगी थी। सड़क के किनारे और मकानों में बिजली के बल्ब जगमगा उठे थे। आती–जाती टेक्सियों, बसों और आदमियों के बीच रास्ता निकालता हुआ मोती आगे बढ़ता जा रहा था। कहाँ जाना है– यह उसे पता न था। उसको केवल इतना ज्ञात था कि आज दूसरी बार बेवकूफी करके वह वर्मा जी के यहाँ मुँह दिखाने के लायक नहीं रह गया है।

सड़क पर पैदल चलने वाले कई लोगों के साथ बच्चे भी थे। मोती जैसे सुंदर पिल्ले को देखकर कई बच्चों ने उसे पकड़ने का प्रयत्न किया, लेकिन उसने फुर्ती से अपने को बचा लिया। धीरे–धीरे काफी रात बीत गई। सड़क की चहल–पहल शांत होने लगी। इस बीच मोती थककर चूर हो चुका था। आराम करने के लिए उसने सुरक्षित स्थान की तलाश में चारों तरफ निगाह दौड़ाई, उसे कुछ दूर पर एक खंडहर दिखा। वह खंडहर में घुसकर एक कोने में लेट गया।

मोती ने सोने का बड़ा प्रयत्न किया, पर नींद न आई। विमल उसे अपनी चारपाई के नीचे जूट के नर्म बिस्तर पर सुलाता था, जबकि यहाँ ऊबड़–खाबड़ ठंडे फर्श पर पड़ा था। ऊपर से कान के पास आकर भनभनाते ढेरों मच्छरों ने भी परेशान कर रखा था। ऐसे में नींद आती भी तो कैसे? करवट पर करवट बदलते हुए नींद आई भी तो उस समय, जब मुर्गे बांग देने लगे थे।

मोती की नींद खुली तो धूप अच्छी तरह निकल आई थी। वह बदन झाड़कर खंडहर से बाहर आया और एक तरफ चल पड़ा। कुछ दूर पर पाँच–छ: बच्चे पिचकारियों से एक–दूसरे पर रंग फेंक रहे थे। मोती को देखते ही उन लोगों ने अपनी पिचकारियाँ उसकी तरफ तान दी। अगले ही क्षण वह लाल, हरे–पीले और नीले रंग से सराबोर हो गया। रंग बड़ा ठंडा था, मोती को कँपकँपी छूट गयी। वह एक तरफ भागा। लड़के हल्ला मचाते उसकी तरफ दौड़ पड़े। मोती था दौड़ने में तेज। वह उन लड़कों के हाथ न आया, लेकिन इस भाग–दौड़ में दो–तीन बार गिरकर वह मिट्टी और कीचड़ में बुरी तरह सन गया था और बड़ा भद्दा लग रहा था। इस समय दिन के ग्यारह बज रहे थे। मोती को जोरों की भूख लग आयी थी। वह भोजन की तलाश में कई घरों में घुसा, लेकिन कीचड़ में सने गन्दे मोती को देखते ही लोगों ने दूर से ही दुर्र–दुर्र करके भगा दिया।

वह सड़क के किनारे एक बिजली के खम्भे के पास बैठ गया। सब तरफ से निराश होने पर उसे घर की याद आने लगी। वह सोचने लगा, जरा सी बात को लेकर मालिक का घर छोड़कर मैंने बड़ी गलती कर दी। अब तो रास्ता भी भूल गया हूँ, वरना लौट जाता। इसी समय उसने देखा कि चार–पाँच कुत्तों का झुंड उसकी तरफ बढ़ा आ रहा था। एक बार तो उसकी जान ही सूख गई, लेकिन अगले क्षण हिम्मत करके वह सरपट भाग निकला। कुछ दूर पर लड़कों की एक टोली होली खेल रही थी। उनमें विमल का मित्र संतोष भी था। मोती ने उसे पहचान लिया और जाकर उसी के पास खड़ा हो गया। संतोष ने उसे देखते ही कहा– ''रवि, देखो तो यह विमल का खोया हुआ मोती ही है न।'' रवि ने उसे उठा लिया और बोला– ''है तो वही! किन्तु होली खेलकर इसने ऐसी सूरत बना ली है कि पहचाना नहीं जा रहा है।''

''विमल और रानी रात से ही इसके लिए परेशान हैं। दु:ख के मारे होली खेलने भी नहीं निकले, चलो उसे विमल के यहाँ पहुँचा आये।'' संतोष ने सुझाव दिया।

वे सब मोती को लेकर वर्मा जी के घर पहुँचे। विमल और रानी उदास बैठे थे। उन्हें देखते ही उछलकर मोती उनके पास पहुँच गया और पैरों के पास लौटने लगा, मानो अपनी गलती के लिए क्षमा माँग रहा हो।

– सुलतानपुर (उ. प्र.)

देवपुत्र का संघ परिचय अंक २०२५

देवपुत्र के दिसम्बर २०२५ अंक को संघ परिचय अंक के रूप में देखकर प्रसन्नता हुई। आवरण पृष्ठ पर भी भारत माता के चित्र के साथ–साथ संयुक्त परिवार का आभास, एक वृद्ध व्यक्ति के आसपास कुछ सीखने को लालायित बच्चे, यह चित्र बहुत कुछ बोल जाता है। चित्रकार को हार्दिक बधाई।

अपनी बात में संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी जी द्वारा बहुत ही संक्षेप में और बहुत सरल शब्दों में इस अंक को लिखने का, प्रकाशित करने का उद्देश्य बच्चों को समझाया गया है। अनुक्रमणिका के आगे बढ़ते ही सुखद आश्चर्य से अधरों पर मुस्कान आना बड़ा ही स्वाभाविक है। इस अंक की परिकल्पना एक नए अंदाज में, एक नए रूप में की गई है। इस अंक में मासिक पत्रिका ने बाल उपन्यास का रूप ले लिया है। यह प्रयोग बड़ा ही नवीन और मन को भाने वाला है।

श्री. गोपाल माहेश्वरी द्वारा लिखा २७ खण्डों में विभाजित यह बाल उपन्यास, हमारे नन्हें बाल गोपालों को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में बहुत विस्तार से बताता है। यह उपन्यास निस्वार्थ समर्पण की दास्तान को गाता है। और बच्चों के अंदर सेवा, देश प्रेम, समर्पण, नेतृत्व, संवेदनशीलता जैसे अनेक गुणों के बीज अनायास ही रोपित करता चलता है।

उपन्यास का आरंभ पूजा की तैयारी से होता है। भगवाध्वज का स्वागत करते हुए दादाजी बच्चों को बताते हैं कि स्वयंसेवक संघ कहता है 'देश के लिए जिएँ, समाज के लिए जिएँ।' डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार ने विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आरंभ किया था। विजयादशमी के दिन ही श्री. राम ने भालू एवं वानर की संगठित सेना के साथ धर्म युद्ध में रावण का वध किया था और बरसों पूर्व देवताओं ने अपनी संगठित शक्तियों के द्वारा भगवती दुर्गा को साकार किया गया था। इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा इस दिन संगठित शक्तियों के प्रतीक के रूप में संचलन निकाला जाता है। कुछ प्रेरक घटनाओं के साथ उपन्यास आगे बढ़ाता है और बच्चों को स्वयंसेवक की एक स्पष्ट परिभाषा समझाता है। ये घटनाएँ बच्चों के अंदर राष्ट्रप्रेम के बीज रोपित करती हैं।

१० नवम्बर १९२९ को डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार संघ के प्रथम सर संघचालक बने। यद्यपि वे स्वयं ऐसा नहीं चाहते थे। परंतु उनसे अधिक योग्य व्यक्ति इस पद के लिए और कोई नहीं था अत: उन्हें सामूहिक निर्णय के आगे झुकना पड़ा और यह पद उन्होंने स्वीकार किया। यह पद संघ के कार्यों को ठीक से प्रतिपादित करने के लिए सृजित किया गया। संघ की एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि संघ का प्रत्येक सदस्य चाहे वह सरसंचालक ही क्यों ना हो बराबर होते हैं। कोई बड़ा या छोटा नहीं होता।

काका जी बच्चों को बताते हैं संघ की प्रार्थना भी विशेष है हर प्रार्थना में हम स्वयं के लिए कुछ ना कुछ माँगते हैं परंतु यह प्रार्थना ऐसी है जिसमें स्वयं के लिए कुछ भी नहीं मांगा जाता। यह प्रार्थना मातृभूमि की की जाती है। प्रचारक शब्द बच्चों ने अवश्य सुना होगा परंतु संघ का प्रचारक एक ऐसा व्यक्ति होता है, जो स्वयं को राष्ट्र को जोड़ने के लिए समर्पित करता है। वह न शादी करता है, न नौकरी, न बच्चे। संघ ही उसकी देखभाल करता है और वह बहुत ही सादगी भरा जीवन जीते हुए देश को मजबूत करने के प्रयास

में रत रहता है।

बच्चों के पूछने पर प्रचारक हरीश जी के द्वारा संघ का बहुत ही सरल शब्दों में अर्थ समझाया जाता है। जो बच्चों को यह बताता है कि संघ से जुड़ने की कोई आयु नहीं है। कोई भी, कभी भी जो जन्मभूमि के प्रति समर्पित है और कुछ करना चाहता है जुड़ सकता है।

बच्चे जब संघ की शाखा में जाते हैं तो वहाँ का अनुभव उन्हें आनंद विभोर कर देता है। ऊँच-नीच से ऊपर उठकर बराबरी का वहाँ का व्यवहार उन्हें अंदर तक आकर्षित करता है और वे स्वयं भी संघ के सदस्य बन जाते हैं। १०० वर्ष पुरानी संस्था का सदस्य बनना उन्हें पुलकित करता है। दादाजी उन्हें संघ के ६ पर्वों की भी जानकारी देते हैं।

मातृशक्ति के लिए भी संघ की राष्ट्रीय सेवा समिति की स्थापना की गई। जहाँ शाखाओं में वह सभी कार्य होता है जो संघ की शाखों में होता है। इसके अतिरिक्त आमजन के लिए संघ केवल पाँच संकल्प की अपेक्षा करता है। इन पाँच संकल्पों को 'पंच परिवर्तन' का नाम दिया गया है। ये हैं स्वदेशी अपनाएँ, परिवार संस्था को मजबूत करें, सामाजिक समरसता की स्थापना करें, नागरिक दायित्व को निभाएँ, पर्यावरण चेतना जगाएँ।

इस उपन्यास को लिखते हुए श्री. गोपाल माहेश्वरी जी ने बाल मन का पूरा ध्यान रखा है और इस गंभीर विषय को बहुत ही सरल शब्दों में एक खूबसूरत लड़ी के रूप में पिरोकर बच्चों के लिए प्रस्तुत किया है। भाषा-शैली बच्चों को बाँधकर रखने वाली है। प्रत्येक खंड में उचित रंगीन चित्र बच्चों के लिए इसे और भी अधिक आकर्षक बना रहे हैं। इस सफल सार्थक प्रयास के लिए श्री. गोपाल माहेश्वरी जी को बहुत-बहुत बधाई। निश्चित रूप से इस संग्रहणीय अंक को पाकर बच्चे आनंदित होंगे।

- नीलम राकेश, लखनऊ (उ. प्र.)

देवपुत्र
के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	राकेश भावसार
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	राकेश भावसार
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं राकेश भावसार एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(राकेश भावसार)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

प्रकृति के प्रति

– कन्हैया साहू 'अमित'

एक दिन की बात है, गिली नाम की एक छोटी गिलहरी अपने प्यारे उद्यान में खेल रही थी। उद्यान चारों ओर से हरी-भरी घास से ढँका हुआ था। उद्यान के मध्य में लकड़ी की एक पुरानी बेंच रखी थी। गिली अपनी छब्बेदार पूँछ को लहराते हुए इधर-उधर दौड़ती। बार-बार उस बेंच पर चढ़ती-उतरती। इस खेल में उसे बहुत आनंद आ रहा था। इसमें उसे समय का पता ही नहीं चला। अब उसे भूख लगने लगी।

गिली ने स्वयं से कहा- ''ओह! अब तो भूख बहुत लग रही है। कुछ खाना मिल जाए तो मैं अपनी भूख मिटाऊँ!''

वह खाने की तलाश में इधर-उधर घूमने लगी। उसने पेड़ों पर जा-जाकर खाना ढूँढा। परंतु उसे पेड़ों पर खाने को कुछ नहीं मिला। उदास हो वह आखिर में बेंच के पास वापस आ पहुँची। वहाँ उसे बेंच के नीचे घास में कुछ बीज पड़े हुए दिखाई दिए। उसकी आँखें चमक उठीं।

'अरे वाह! बीज! ये तो मेरे पसंदीदा हैं।'' गिली खुशी से चहक उठी।

वह झटपट बीज खाने लगी। जैसे ही वह कुछ बीज खाने लगी, उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने स्वयं से कहा- ''यदि मैं सारे बीज खा जाऊँगी, तो आगे क्या खाऊँगी?''

गिली ने सोचते हुए कहा- ''अच्छा! क्यों न कुछ बीज जमीन में दबा दूँ? इससे पेड़ उगेंगे और फिर उनमें फल के साथ बीज लगेंगे।'' तभी वहाँ पर उसकी मित्र, चिंकी चिड़िया उसके पास आई। चिंकी ने पूछा- ''अरे गिली! तुम क्या कर रही हो?''

गिली मुस्कुराते हुए बोली, ''मैं बीज खा रही थी, लेकिन अब मैंने सोचा कि इन बीजों को जमीन में दबा दूँ, ताकि बाद में और पेड़ उग सकें।''

चिंकी ने आश्चर्य से कहा- ''अरे वाह! ये तो बहुत ही अच्छा विचार है। अगर और पेड़ उगेंगे, तो सबके के लिए खूब सारे फल और बीज मिलेंगे। आने वाले समय में सबके रहने के लिए पर्याप्त जगह भी होगी।''

गिली ने कुछ बीज उठाए और जमीन में छोटे-छोटे गड्ढे बनाकर उन्हें दबाने लगी। चिंकी ने भी अपनी चोंच से बीज उठाकर उसकी सहायता की। दोनों ने मिलकर बीजों को मिट्टी में अच्छी तरह दबा दिया।

गिली ने खुश होकर कहा- ''अब हमें बस प्रतीक्षा करनी है। शीघ्र ही यहाँ छोटे-छोटे पौधे उगेंगे और हमें खुशियाँ मिलेंगी।

कुछ दिन बाद, जब गिली पार्क में आई, तो उसने देखा कि बीजों से छोटे-छोटे अंकुर निकलने

लगे हैं। वह खुशी से चिंकी को बुलाते हुए बोली, ''देखो, देखो! अंकुर निकल आए हैं।''

चिंकी ने उड़ते हुए कहा, ''हाँ गिली! ये देखो! ये सभी बहुत प्यारे लग रहे हैं। कुछ वर्षों में ये बड़े भी हो जाएँगे।''

समय बीतता गया, और छोटे अंकुर धीरे-धीरे बड़े पेड़ों में बदलने लगे। पहले से ही वहाँ भी पेड़ थे, जिनमें ढेर सारे फल लगे थे। गिली और उसके सारे मित्र पेड़ों के नीचे इकट्ठा होते, फलों के बीज खाते। उछल-कूद कर हँसी-खुशी से अपना समय बिताते। अपने लगाए पेड़ों को बढ़ते देख गिली और चिंकी खूब प्रसन्न रहते।

गिली ने चिंकी से कहा, ''देखा, हमारे छोटे से काम न कैसे पूरे उद्यान को और भी हरा-भरा बना दिया। अब यहाँ पर किसी को खाने के लिए फलों और बीजों की कभी कोई कमी नहीं होगी। हम सबको पेड़ उगाने में इसी तरह सहयोग देते रहना चाहिए। इससे धरती पर हरियाली कभी समाप्त नहीं होगी। किसी को कभी भी रहने तथा खाने की कोई चिंता नहीं होगी।'' चिंकी ने सिर हिलाते हुए कहा- ''तुम्हारा विचार सचमुच बहुत अच्छा है, गिली। हमें हमेशा प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए। हम सबको अपने-अपने शक्ति अनुसार सहयोग अवश्य करना चाहिए।''

गिली ने मुस्कुराते हुए कहा- ''हाँ! यदि हम धरती को कुछ देते हैं, तो वह हमें और अधिक लौटाती है। हमें अपनी प्रकृति के प्रति अपना कर्त्तव्य नहीं भूलना चाहिए।''

- भाटापारा (छत्तीसगढ़)

बाल लेखनी

भरोसा

- पावनी पांडे

एक अध्यापक अपने हर छात्र का आत्मविश्वास बढ़ाते रहते थे। एक बार उनके पास एक जिज्ञासु छात्र आया। लोग उसको कमजोर समझते उसकी काया का मजाक बनाते जबकि अध्यापक उसे कह रहे थे कि परिहास से घबराकर अपने लक्ष्य को न छोड़े क्योंकि, लक्ष्य मिलते ही हंसने और मखौल करने वालों की राय बदल जाती है।

लेकिन फिर भी अपनी दुर्बल देह के कारण वह किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न नहीं कर पा रहा था।

अध्यापक ने उसको आशीर्वाद दिया और हिम्मत बढ़ाते हुए कहा कि ''जीवन में यह इतना महत्व नहीं रखता कि आप शारीरिक रूप से कितने ताकतवर हैं, जितना की आपका मानसिक रूप से मजबूत होना।

अपने सपने तथा विचार को देखते रहो। मन में आने वाले विचार की आयु केवल एक पल की होती है, परन्तु उसके प्रभाव को, हम अनंत समय तक अनुभव करते हैं।

स्वयं को भीतर से मजबूत करो। और जो भी हालत है उसको सहज रूप से लो। वातावरण को स्वीकार करने की हिम्मत और सुधार करने की नीयत हो तो मनुष्य बहुत कुछ सीख सकता है।''

- गुरुग्राम (हरियाणा)

होली है भाई

– रन्दी सत्यनारायण राव

चंपक वन में होली के दिन भोर से ही झूमरू बंदर, अबीर और पिचकारी में रंग भर कर तैयार था। पड़ोस में रहने वाला कालू उसके साथ था। सूरज निकलते ही सारे जानवर अपने–अपने स्थानों से निकल पड़े और सब एक–दूसरे पर रंग–अबीर की बौछार करने लगे। झूमरू बंदर और कालू भी भीड़ में शामिल हो गए। वातावरण में, सभी ओर आनंद ही आनंद था। झूमरू बंदर की दृष्टि अचानक एक पेड़ के नीचे चली गई।

वहाँ उसने टिंकू खरगोश को रोते हुए देखा। वह कालू को साथ लेकर उसके पास गया और उसके रोने का कारण पूछा। टिंकू ने बताया– ''मैं भोर में, सुंदर वन में रहने अपने मित्र के साथ, होली खेलने जा रहा था, रास्ते में, बदमाश पीलू सियार अपने मित्रों के साथ आया और होली के बहाने से मेरे चेहरे के साथ पूरे शरीर में कीचड़ मल दिया और फिर मेरे रंग और रुपये लूट ले गया।'' यह कहकर वह फिर से रोने लगा। उसे देख कर झूमरू को दया आ गई।

उसने कहा– ''टिंकू! तुम मत रोओ, जाओ घर जा नहा–धो आओ।'' फिर उसने अपनी जेब में हाथ डाला, पैसे उसे कम लगे, तो उसने अपने मित्र कालू से कहा– ''भाई! कालू टिंकू को अभी इसी समय पैसों की आवश्यकता है, मेरे पास इसे देने के लिए कम पड़ रहे हैं, क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं? कालू ने झट अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले और कहा– ''भाई! बुरे समय में काम न आए वह मित्र किस काम का और तुम तो दूसरे की सहायता कर रहे हो, यह तो परोपकार की बात है न?''

कहते हुए उसने भी कुछ पैसे निकाल कर झूमरू के हाथ में रख दिए। झुमरू ने टिंकू के हाथ में पैसे दे कहा– ''भाई! टिंकू इन पैसों से रंग खरीद कर होली की खुशी में शामिल हो जाओ।''

टिंकू के चले जाने के बाद, झुमरू ने कालू से कहा– ''पीलू को ऐसे ही जाने दे तो उसका साहस और बढ़ जाएगा। चले उसे पकड़ कर राजा शेरू के पास हाजिर करते हैं, उसको सजा वे ही देंगे।'' और उन दोनों ने पीलू को उसके अड्डे पर जा पकड़ा। उसे अपने राजा शेरू के आगे कर दिया, उसने राजा शेरू से पूछा– ''तुम्हें किसी की खुशी छीनने में क्या आनंद मिलता है, होली में प्यार और स्नेह से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

लेकिन तुमने इस पर्व की गरिमा को कलंकित करते हुए, टिंकू को रंग की जगह कीचड़ और गोबर से सान दिया, बताओ! ऐसा तुमने क्यों किया? पीलू भय से गिड़–गिड़ाते हुए बोला– ''महाराज! मुझसे भूल हुई होली के दिन रंग लगाने के बहाने, लोगों की जेब साफ करना मैंने सीख रखा था। वर्षभर से मैं इसी दिन की प्रतीक्षा करता रहता था। इस दिन मुझे इतने पैसे मिल जाते थे कि इनसे बड़े आराम से मेरा गुजर–बसर हो जाता था। फिर आज से पहले से कभी पकड़ा नहीं गया, इसलिए खतरे का ज्ञान ही नहीं हुआ। इसलिए अब की बार क्षमा कर दीजिए।''

उसकी बात सुन राजा शेरू ने निर्णय सुनाते हुए कहा– ''पीलू ने अपनी गलती मान कर साहस और ईमानदारी का काम किया है, वर्ना आज कौन अपराधी, अपने को गलत मानते हुए इसे स्वीकार करता है? इसलिए इसे सजा दे रहा हूँ कि यह होली की शाम को, चंपक वन के लोगों को मुफ्त में, माल पुआ और सब्जी खिलाएगा।''

सब राजा के निर्णय से प्रसन्न हो गए। होली का उत्साह और उमंग, परवान चढ़ने लगा। पर पीलू सियार, दिन भर होली खेलना भूलकर चंपक वन के लोगों के लिए माल पुए बनाने में लग गया, उसके साथी भी, सब्जी बनाने और पूरियाँ तलने में लग गए। इसमें भी उनको एक विचित्र आनंद मिल रहा था। शाम को पीलू सियार ने चंपक वन के लोगों को मालपुआ और पूरी–सब्जी खिलाकर, अच्छा नागरिक बनने की शपथ ली।

– जमशेदपुर (झारखण्ड)

बौद्धिक क्रीडा

भूल–भुलैया : ण खाली

– चाँद मोहम्मद घोसी

क, ख, ग और घ धागे की जाली के धागे आपस में उलझ गए हैं। प्रिय बच्चो, सभी धागे को ध्यान से सुलझाकर बताइए कौन–सा धागा कितने नम्बर का है? सही उत्तर बताने के बाद सभी बच्चे प्रसन्नता से बजाना आपस में मिलकर ताली।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

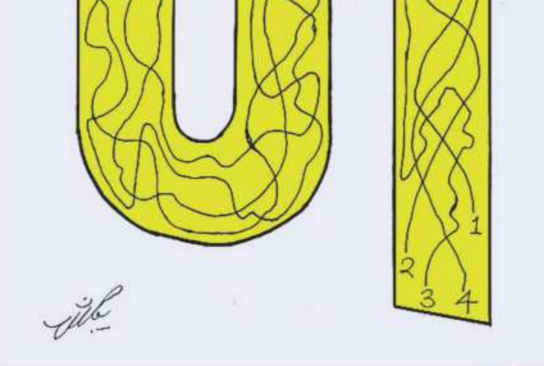

राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला

– डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

मानव सभ्यता के विकास में धातुओं का अत्यधिक योगदान रहा है। प्राचीन काल से ही मनुष्य ने ताँबा, लोहा, सोना और चाँदी जैसी धातुओं का उपयोग औजार, हथियार, आभूषण तथा भवन निर्माण में किया। वैदिक युग केवल आध्यात्मिक या धार्मिक ही नहीं था, बल्कि यह वैज्ञानिक दृष्टि से भी समृद्ध था। उस समय लोग धातुओं को पहचानते थे, उन्हें शुद्ध करते थे और उनसे औजार, रथ तथा आभूषण बनाते थे। इस ज्ञान को वैदिक साहित्य में ऋचाओं के रूप में संजोया गया है।

ऋग्वेद (१.५८.५):

''अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वत: पर्यभूषसि।
स इद्देवान् वि गच्छति।।''

अग्नि देव धातुओं को शुद्ध करने और चमकाने वाले हैं। जैसे अग्नि यज्ञ को देवताओं तक पहुँचाती है, वैसे ही वह धातुओं को भी शुद्ध व उपयोगी बनाती है।

ऋग्वेद (१०.८५.८):

''हिरण्यं लोहमयमश्वं...''

सोने और लोहे से बने रथ तथा औजारों का वर्णन मिलता है। इसका मतलब है कि उस समय लोग लोहे और सोने का प्रयोग युद्ध और परिवहन के लिए करते थे।

अथर्ववेद (११.३.७):

''अयं मे हेमनो रसोऽयं रसोऽस्य लोहिन:।''

(यह सोने का रस है और यह लोहे का रस है।) यहाँ संकेत है कि लोग धातुओं को गलाकर (पिघलाकर) अलग करना जानते थे।

ऋग्वेद (४.२.१७):

''त्वं हि रत्नधा असि विश्वा धातवो यमसि।''

(हे अग्नि! आप सब धातुओं और रत्नों को धारण करते और शुद्ध करते हैं।)

इससे स्पष्ट है कि धातुओं की खोज और उनके उपयोग में अग्नि को महत्वपूर्ण मानते थे।

यजुर्वेद (१८.१३):

''अयं मेंऽग्ने हिरण्यस्योपस्थोऽयं लोहस्योपस्थ:।

(अग्नि सोने और लोहे का आधार है।)

धातु–कार्य के लिए अग्नि को सबसे आवश्यक तत्व माना गया।

समय के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति ने धातुओं के अध्ययन को और उन्नत बनाया। इसी उद्देश्य से धातुकर्म प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई। ये प्रयोगशालाएँ धातुओं के गुण, उनकी संरचना, मिश्रधातुओं के निर्माण तथा औद्योगिक उपयोगों के अध्ययन का प्रमुख केंद्र होती हैं। भारत में धातुकर्म पर शोध करने वाला मुख्य संस्थान **सीएसआईआर–राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (CSIR-NML)** है, जो जमशेदपुर, झारखंड में स्थित है। यह वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के अधीन कार्य करता है और खनिज, धातु विज्ञान और सामग्री अनुसंधान के क्षेत्र में काम करता है।

धातुकर्म प्रयोगशालाओं की स्थापना मुख्यत:

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए की जाती है। विद्यालयों, तकनीकी संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में ऐसी प्रयोगशालाएँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती हैं। वहीं औद्योगिक अनुसंधान संस्थानों में धातुकर्म प्रयोगशालाएँ नई मिश्रधातुओं के निर्माण, धातु की शुद्धता जाँचने और उत्पादन क्षमता बढ़ाने हेतु कार्य करती हैं।

धातुकर्म प्रयोगशाला के उद्देश्य

धातुकर्म प्रयोगशाला का प्रमुख उद्देश्य धातुओं के अध्ययन और उनके व्यवहार को समझना है। इसके अंतर्गत–

१) धातुओं और अधातुओं की पहचान करना।

२) धातुओं की भौतिकी एवं रासायनिक विशेषताओं का परीक्षण।

३) धातुओं से मिश्रधातु बनाना तथा उनके गुणों का अध्ययन करना।

४) धातु की मजबूती, तन्यता, चालकता और कठोरता की जाँच।

५) उद्योगों और तकनीकी कार्यों के लिए उपयुक्त धातु का चयन।

६) धातु को शुद्ध करने और संरक्षित रखने की विधियों का अध्ययन।

प्रमुख कार्य

धातुकर्म प्रयोगशाला में कई प्रकार के कार्य किए जाते हैं, जैसे–

* धातु को गर्म करके ढालना, मोड़ना और उसके आकार में परिवर्तन करना।

* धातुओं की कठोरता (Hardness Test), तन्यता (Tensile), और आघात (Impact) की जाँच।

* धातुओं की सूक्ष्म संरचना का सूक्ष्मदर्शी (Microscope) द्वारा अध्ययन।

* विद्युत धातुकर्म (Electrometallurgy) और रासायनिक विधियों द्वारा धातु को शुद्ध करना।

* मिश्रधातुओं का निर्माण और उनका औद्योगिक उपयोग।

महत्व

धातुकर्म प्रयोगशाला का विज्ञान, उद्योग और समाज–तीनों क्षेत्रों में विशेष महत्व है।

१) **औद्योगिक महत्व**– विभिन्न उद्योग जैसे ऑटोमोबाइल, निर्माण कार्य, रक्षा और विद्युत उपकरण उद्योग में उच्च गुणवत्ता की धातुओं की आवश्यकता होती है, जिसकी पूर्ति इन प्रयोगशालाओं में होती है।

२ **आर्थिक महत्व**– नई मिश्रधातुओं के निर्माण से उत्पादन क्षमता बढ़ती है और देश की आर्थिक प्रगति होती है।

३ **वैज्ञानिक महत्व**– धातुओं के गुणों के गहन अध्ययन से विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नए आविष्कार संभव होते हैं।

४ **पर्यावरणीय महत्व**– धातुओं के पुनर्चक्रण (Recycling) और संरक्षण की विधियाँ विकसित कर पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है।

धातुकर्म प्रयोगशालाएँ आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीकी विकास की रीढ़ हैं। ये प्रयोगशालाएँ धातुओं के गुण, उपयोग और संरक्षण के क्षेत्र में निरंतर अनुसंधान कर मानव जीवन को सरल और उन्नत बनाने में सहयोग करती हैं।

– भोपाल (म. प्र.)

सुभाषित

साँच बराबर तप नहीं
झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है
वा के हिरदै आप।।

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063. Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : interview@suryafoundation.org Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए एक प्रतिष्ठित संस्थान है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना और उन्हें समाजसेवा के काम में जोड़ना। हमें संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले तथा शारीरिक रूप से सक्षम युवकों की आवश्यकता है। इच्छुक आवेदक नीचे दी गई Catagories के लिए आवेदन कर सकते हैं। Selected candidates को interview की प्रक्रिया से गुजरना होगा।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद आवश्यक ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके पश्चात एक वर्ष के लिए सूर्या फाउण्डेशन द्वारा संचालित सेवा कार्यों में On Job Training (OJT) दी जाएगी। OJT के बाद Performance के आधार पर Stipend में बढ़ोतरी करते हुए मानधन दिया जाएगा।

Category	Experience	Age Between	3 months Initial Training + 1 year OJT Stipend
Under Graduate, Graduate & Post Graduate	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Pursuing / Passed)	18-25	1.5 - 2 L Per Annum
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	18-28	3.6 L Per Annum
	B.Ed., MSW, M.A. *(Freshers / Experience*)*	18-25	2.4 - 3 L Per Annum
	MCA, M.Ed., M.Sc., M.Com. *(Freshers / Experience*) Ph.D. **	18-25	3 - 3.6L Per Annum
	Mass Communication (Media) - PG	18-28	2.4 - 3 L Per Annum
	Diploma (Multi Media, Electrical, Electronics ++)	18-25	1.8 - 3 L Per Annum
Engineers, (Fresher & Experienced)	B.Tech	22-30	3.6 - 4 L Per Annum
	M.Tech	22-30	4.2 - 4.5 L Per Annum
MBA (Fresher & Experienced)	MBA	22-30	3 - 3.6 L Per Annum
Law	LLB	22-28	2.4 - 3 L Per Annum
	LLM	22-28	3 - 3.6 L Per Annum
CA	IPCC / MTER	18-25	4 - 5 L Per Annum
	Fresher / Experienced*	22-30	6 L Per Annum Onwards
GMT	Graduate Management Trainee	*विवरण नीचे दिया गया है @*	

@ **GMT** ***योग्यता*** – 2026 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। ***आयु :*** 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) में भेजा जायेगा। OJT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 6,000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 8000/-, 12वीं में 10,000/- Graduation I[st] year में 13,000/-, II[nd] Year में 16,000/-, III[rd] Year में 20,000/-, MBA/MCA I[st] Year में 23,000/-, MBA/MCA II[nd] Year में 28,000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 40000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन / मानधन इससे अधिक भी हो सकता है।

*** Ph.D. *एवं* Experienced Candidates *की* salary *उनकी योग्यता और* Experience *के आधार पर तय की जाएगी।***

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / संघ शिक्षा वर्ग / प्राथमिक शिक्षा वर्ग / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।

कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ उपरोक्त पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

आवेदन की अंतिम तिथि : 30 अप्रैल 2026

रंग मत लगाना!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

संवेदनशील हों

– रजनीकांत शुक्ल

नन्हे मित्रो! मनुष्य का मस्तिष्क किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह इतनी जटिलताओं से बना है कि जब बड़े–बड़े डॉक्टर और वैज्ञानिक भी इसकी कार्यप्रणालियों को देखते हैं तो चकित रह जाते हैं। अरबों तंत्रिका कोशिकाओं या न्यूरांस से मिलकर बना संयोजन है हमारा ये मस्तिष्क जो हमारी सभी तरह की गतिविधियों को नियंत्रित करता है ये गतिविधियाँ हैं सोचना, याद रखना, भावनाएँ और शरीर की क्रियाएँ जिनमें साँस लेना और दिल का धड़कना भी सम्मिलित हैं।

ऐसे में इस मस्तिष्क की इन गतिविधियों में अगर व्यवधान आ जाए तो फिर क्या हो? जरा सोचो। ऐसा ही एक बड़ा व्यवधान है सेरेब्रल पाल्सी यानि कि तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाली स्थिति। इसमें तंत्रिका तंत्र का मतलब मस्तिष्क, रीढ की हड्डी और नसों की गतिविधियाँ हैं। संक्षेप में कहें तो यह शरीर की गति और माँसपेशियों के समन्वय को प्रभावित करने वाली शारीरिक अक्षमता है।

गुजरात कर्णावती (अहमदाबाद) के व्यास ओम जिग्नेश इसी सेरेब्रल पाल्सी एम आर से नब्बे प्रतिशत तक पीड़ित हैं। उनकी माँ वर्षा व्यास और पिता जिग्नेश की शादी के ग्यारह वर्ष बाद ओम का जन्म हुआ। वैसे तो हर बच्चा अपने माता–पिता के लिए विशेष होता है। परन्तु शादी के ग्यारह वर्ष बाद जन्में ओर के प्रति उनका स्नेह विशेष था। जब ओम मात्र तीन वर्ष के थे और सामान्य बच्चों की तरह स्वयं को संभाल पाने में असमर्थ दिखाई दिए तो उनकी माँ वर्षा को चिंता हुई और उन्होंने ओम को डॉक्टरों को दिखाया जिससे अनेक जाँच के बाद पता चला कि ओम सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित हैं और नब्बे प्रतिशत दिव्यांग हैं। ऐसे में जब ओम के माता–पिता ने उन्हें पढ़ाई के लिए प्रवेश दिलवाने की अनेक विद्यालयों में प्रयत्न किया किन्तु किसी भी विद्यालय ने उनकी इस हालत को देखते हुए प्रवेश देने के लिए हाँ नहीं की।

ओम की हालत ऐसी थी कि जिसमें उनका ठीक से बैठ पाना तो दूर स्वयं को सँभाल पाने तक में स्थिति नहीं थी। मस्तिष्क की हालत यह थी कि न तो वे ठीक से कुछ लिख पढ़ सकते थे और न ही बोल सकते थे। अपनी इन्हीं सारी परेशानियों के साथ वे आज भी हैं।

उसी समय ओम की दादी घर में ओम को सुंदरकांड का पाठ सुनाने लगी थीं जिसे दो तीन बार सुनकर ओम ने उसकी कुछ पंक्तियाँ दोहराईं जबकि डॉक्टरों के अनुसार ऐसी परेशानी में बच्चे को दो शब्द भी बोल पाना आश्चर्य था। घर के लोग उत्साहित हुए और उनके लगातार प्रयासों से धार्मिक पाठों को तीन से चार बार सुनकर ओम उन्हें धीरे–धीरे टूटे–फूटे शब्दों में याद करके दोहराने लगे। उत्साहित होकर घर के लोग जब साथ में लग गए।

ओम लगातार श्लोक सुनते रहे उन्हें एक के बाद एक गुनगुनाते रहे। विशेष बात यह रही कि धर्म से संबंधित पाठों को याद करने में ओम को अधिक से अधिक एक दिन का समय लगता। देखने सुनने वालों को आश्चर्य होता कि तीन से चार बार लगातार सुनने में ओम को वह बात कंठस्थ हो जाती। किन्तु इसके लिए ओम की माँ वर्षा ने लगातार ओम के साथ प्रयास किए। इस तरह ओम ने एक–एक सुंदर कांड, हनुमान चालीसा, रामरक्षा स्तोत्र, रामचरित मानस की चौपाईयाँ, महिषासुर मर्दिनी, गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, दुर्गाष्टक, शिवतांडव स्तोत्र, के साथ–साथ गीता के श्लोक और कबीर की वाणी को भी याद कर लिया।

उनकी यह धुन भक्ति गीतों और छंद श्लोकों की ओर ही रही। फिल्मी गानों और गरबा जैसी अन्य

संगीत की शैलियों में उनका रुझान नहीं रहा। पढ़ने लिखने में असमर्थ होने के बाद भी ओम की बढ़ती आध्यात्मिक रुचि और समर्पण के कारण घर के लोगों ने उन्हें मंदिर ले जाना प्रारंभ किया जिससे उनकी अद्वितीय क्षमताओं ने उन्हें इन दिशा में आगे बढ़ने के लिए लगातार प्रेरित किया।

ओम दो शब्द भी ठीक से नहीं बोल पाते हैं मगर अपने इसी समर्पण और लगन के चलते उन्हें संस्कृत के दो हजार से अधिक श्लोक मुँह–जबानी याद है। कहते हैं कि किसी को जिंदगी में चुनौती मिलती है किन्तु यहाँ तो ओम के लिए उनकी जिंदगी ही चुनौती मिलती हैं यदि यहाँ तो ओम के लिए उनकी जिंदगी ही चुनौती बन गई थी। किन्तु ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी अपनी आत्म शक्ति के बल पर घर के लोगों के सहयोग से ओम ने उन पर विजय प्राप्त की।

वर्तमान में ओम की आयु अट्ठारह वर्ष बेशक है किन्तु उनकी शारीरिक क्षमता चार वर्ष के बालक के बराबर है इसीलिए उनके सभी दैनिक कार्य घर के लोगों विशेष रूप से माँ द्वारा किए जाते हैं। अपनी शारीरिक परेशानियों के बाद भी ओम ने पूरे देश में घूम–घूम कर दो सौ से भी अधिक स्टेज शो करके लोगों की प्रशंसाएँ बटोरी हैं। उनकी इन ढेर सारी उपलब्धियों की गूँज जब चारों ओर फैली तो दिव्यांग व्यक्ति के रूप में उन्होंने अपने भक्ति गीत पाठ के लिए देश और विदेश की रिकार्ड बुक में अट्ठारह नामांकन प्राप्त किए। जिनमें उन्हें लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स, एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स, इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स, गोल्ड बुक ऑफ वर्ल्ड, वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ यूके, चिल्ड्रन बुक ऑफ रिकार्ड, एशिया पैसिफिक रिकार्ड, इंडिया स्टार आइकान अवार्ड, इंडिया स्टार पर्सनैलिटी जैसे नामांकन मिले हैं। उन्हें दिव्यांग जन राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सांस्कृतिक संरक्षण में योगदान देने वाली उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए देश के माननीय प्राधनमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा प्रशक्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्हें २०१७ में देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा सम्मानित किया गया।

और २०२४ में वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर के अवसर पर व्यास ओम जिग्नेश को कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू जी के हाथों से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आज ओम का पूरा घर ट्राफी पदकों और सम्मानों से भरा हुआ है। हालाँकि ओम के जन्म के कुछ समय बाद उनकी स्थिति को देखकर उनके माता–पिता को अवश्य कष्ट था किन्तु आज उनकी इन ढेर सारी उपलब्धियों को देखकर उन्हें ओम पर गर्व होता है। आज ओम की माँ का कहना है कि इस संसार में जन्म लेने वाला हर विशेष बच्चा खास होता है। बस समाज को उसके प्रति थोड़ा संवेदनशील होने की जरूरत है। वो जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार कर लेने की जरूरत है।

नन्हे दोस्तो,

चाहे जैसी स्थितियाँ हों हिम्मत मत हारो।
पर्वत को राई कर सकते हो तुम हो यारो!
राहों की इन बाधाओं से भला डरो क्यों तुम,
मरना ही जो एक बार, तो इनको तुम मारो।

– नई दिल्ली

बाल गीत

होली है भाई होली है

– उदय मेघवाल 'उदय'

आओ कर लें थोड़ा धमाल।
होली है भाई होली है।
अपनी भी पूरी तैयारी।
रंगों से भर ली पिचकारी।
रंग भरे इन गुब्बारों से,
होगी सब पर गोला–बारी।
रंग देंगे आज सबके गाल।
होली है भाई होली है।

उड़े हवा में अबीर गुलाल।
होली है भाई होली है।
हुरियारों की आई टोली।
ढोल बजाकर करें ठिठोली।
मुखड़े सबके रंगे हुए हैं,
कहते नाचो मिल हमजोली।

भला बुरा न किसी को कहना।
स्नेह–प्रेम से मिलकर रहना।
होली का यह पर्व सिखाता,
सीखे अच्छी बातें गहना।
रखना इसका पूरा ख्याल।
होली है भाई होली है।

– चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

बौद्धिक क्रीडा

पहेलियाँ

– माणक चन्द गहलोत

(१) प्रथम कटे तो दोस्त बनूँ,
अन्त कटे तो चिड़िया।
तीन अक्षर का नाम मेरा,
जल्दी बता दो भैया।

(२) लम्बा पतला मेरा तन,
अँग्रेजी में मैं हूँ गन।
गोली खाकर जब मैं थूकूँ,
वातावरण हो जाये सन्न।

(३) तीन अक्षर का मेरा नाम,
प्रथम कटे हो जाऊँ कम।
अन्त कटे बनूँ पक्षीराज,
बताओ जल्दी लगाकर दम।

(४) ठोस द्रव गैस,
तीनो है मेरी अवस्था।
हर चीज को कर दूँ ठण्डा,
ऐसी है मेरी व्यवस्था।

– नागौर
(राजस्थान)

उत्तर– १) बयार, २) बन्दूक, ३) बाजरा, ४) बर्फ।

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

निराशा के क्षणों में

– पवित्रा अग्रवाल

दिव्या को बचपन में ही पोलियो हो गया था, इसलिए वह सब बच्चों की तरह नहीं चल पाती थी। बच्चों को भागते दौड़ते देखकर अक्सर उसकी आँखों में आँसू आ जाते थे। माता–पिता भी उसके भविष्य को लेकर बहुत चिंतित रहते थे। वह अपनी अपंगता के कारण से शाला नहीं जाना चाहती थी पर माता पिता के समझाने पर कि पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़े होने की राह बनानी पड़ेगी क्योंकि भले ही वह ठीक से चल नहीं पाती। इसके सिवा वह हर तरह से सामान्य है। भगवान की कृपा से उसके हाथ भी सामान्य हैं। अभी वह बैसाखी से चलती है, आगे चलकर उसे तीन पहियों वाली गाड़ी भी दिला देंगे।

''पर माँ वहाँ सब मेरा मजाक उड़ते हैं। वहाँ जाकर मेरा किसी काम से मन नहीं लगता।''

''बेटा अभी बस मान–अपमान भूलकर पढ़ने में दिल लगाओ।'' बस माता–पिता की यह बात उसने समझ ली थी और जो उसका मजाक उड़ाते थे वह उनसे दूर रहती थी। उसने अपनी एक दो अभिरुचियों से मित्रता कर ली थी। पर कोई इस विषय में नहीं जानता था।

शाला के वार्षिक समारोह में जब दिव्या का नाम पुरस्कार के लिए पुकारा गया तो साथ की लड़कियों में खलबली मच गई, ऐसा लंगड़ी ने क्या कर दिया?''

''अरे! शायद उसने मेहंदी और रंगोली प्रतियोगिता में भाग लिया था।''

''हाँ, लिया तो था पर हम सब ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया और कक्षा में सबको बताकर उसका खूब मजाक भी उड़ाया था।''

''अरे वाह लंगड़ी रंगोली प्रतियोगिता में पहले स्थान पर आई है?''

''हाँ, सच में पर अब यह भी नहीं कह सकते कि किसी की सहायता से बनाई होगी।''

दिव्या बैसाखी के सहारे स्टेज पर गई तो सभी आश्चर्य चकित थे। किसी को अनुमान भी नहीं था कि वह इतनी सुंदर रंगोली बना सकती है। मुख्य अतिथि भी बहुत प्रभावित थीं।

तभी मेहंदी प्रतियोगिता के लिए एक बार फिर उसका नाम मंच से पुकारा गया। इस बार भी उसे पहला स्थान मिला था। उसके मंच तक जाने से पहले ही हॉल तालियों से गूँज उठा था। वह धीरे–धीरे फिर मंच तक पहुँची और पुरस्कार लेते समय उसके आँसू निकल आए। मुख्य अतिथि जो समाज सेविका थीं उसकी भीगी आँखें देखकर द्रवित हो गई और उससे पूछा–

''आयु के हिसाब से तुम्हारी रंगोली और

मेहंदी दोनों ही बहुत सुंदर हैं, किस से सीखा है?''

''किसी से नहीं दीदी!, अपने आप ही...।''

''अच्छा एक काम करो यह कार्यक्रम समाप्त होने के बाद मुझ से यहीं मिलो।''

कार्यक्रम समाप्ति के बाद मुख्य अतिथि ने दिव्या को स्टेज पर ही बुला लिया। उन्होंने बड़े प्यार से उसे अपने पास बैठाया और बहुत सी बातें कीं और पूछा– ''दिव्या! इसकी प्रेरणा तुम्हें कहाँ से मिली?''

''इसकी प्रेरणा मुझे मेरी कक्षा की लड़कियों से मिली।'' ''कैसे?''

''ना, वह मेरी अपंगता का मजाक उड़ातीं, ना मुझे लंगड़ी कह कर पुकारती और ना मैं दुखी होकर अकेले में बैठी कॉपी के पन्नों पर लकीरें बनाती रहती। बस ऐसे ही फूल पत्ते, आकृतियाँ बनती गई और सब अपमान भूलकर मुझे उसमें मजा आने लगा।''

''अरे वाह।''

''जी दीदी! उन्हीं दिनों एक शादी में मैंने लड़कियों को रंगोली बनाते और मेंहदी लगाते देखा तो एक दिशा मिली। पेपर पर हाथ बनाकर मेंहदी की प्रेक्टिस करने लगी और शौकिया अपने परिचितों के आग्रह पर विशेष पर्वों पर रंगोली भी बना देती थी। पड़ौस की एक दीदी ने यह सब देखा तो प्रभावित हुई और मुझे अपने साथ एक विवाह समारोह में ले गईं, वह भी मेहंदी लगती थीं। मुझे प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने ने मुझ से एक छोटी लड़की के हाथ पर मेहंदी लगाने को कहा। उसके बाद कई छोटी–छोटी लड़कियों ने मुझे घेर लिया 'दीदी! मुझे भी लगाओ, मुझे भी लगाओ।'

इस तरह अभ्यास करते–करते सफाई आती गई फिर तो कुछ बड़ी महिलाएँ भी मुझे मेहंदी के लिए बुलाने लगी। मुझे कुछ आमदनी भी होने लगी। धीरे–धीरे मुझ में आत्मविश्वास पैदा हुआ और आज विद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने की हिम्मत जुटा पाई।''

मुख्य अतिथि जो सोशल वर्कर भी थीं उन्होंने उसे अपनी संस्था की तरफ से एक विशेष पुरस्कार देने का वादा ही नहीं किया बल्कि उसे एक भव्य आयोजन में बुला कर ट्राई साइकिल का उपहार भी दिया। उसके बाद तो दिव्या की दुनिया बदल गई, कोई उसका मजाक नहीं उड़ाता था। पढ़ने में भी अब उसका मन लगने लगा था। भविष्य के प्रति भी वो और उसके माता–पिता आश्वस्त थे कि वह कुछ न कुछ अच्छा कर लेगी।

– बैंगलूरू (कर्नाटक)

कविता

रंग, गुलाल हैं लाए
होली के दिन आए

बस्ती–बस्ती मस्ती
हँसी–खुशी है सस्ती

दुनिया नाचे–गाए
होली के दिन आए

पिचकारी चलती जब
कली–कली खिलती तब

मुँह से निकले हाए
होली के दिन आए

– राजा चौरसिया, उमरियापान (म. प्र.)

सबसे ताकतवर कौन?

– विमला रस्तोगी

पुराने समय की बात है। एक चुहिया थी, समझदार और होशियार। वह अपने बिल को साफ–सुथरा रखती, सँवारती। कहीं से ऊन ले आई, कुतर–कुतर कर छोटे–छोटे टुकड़े किए, गरम बिस्तर बना लिया। चाहे अनाज हो या मेवा। खाने–पीने का सामान उसके घर में भरा रहता। उसके एक बेटा था, नन्हा प्यारा–सा चूहा। चूहिया अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी। बेटे को अपनी आँख से दूर न करती, उसे अच्छी–अच्छी बातें सिखाती जैसे–अच्छी तरह रहने का ढंग, बात करने, चलने, दौड़ने का ढंग। बेटे ने अपनी माँ से अच्छी बातें सीखीं। धीरे–धीरे वह चूहा बिरादरी में अच्छा माना जाने लगा। सभी उसकी प्रशंसा करते–कैसा सुंदर है? सभ्य है, चतुर भी है।' हर तरफ अपने बेटे की प्रशंसा सुनकर चुहिया फूली न समाती।

समय बीतता रहा। नन्हा चूहा जवान हो गया। शादी के लिए रिश्ते आने लगे। जैसे मनुष्यों में अमीर, खानदानी, संस्कारी और नामी परिवारों से संबंध बनाने में लोग गर्व अनुभव करते हैं यह रिवाज चूहों में भी था। बेटे के विवाह की बात थी। चुहिया में भी अकड़ आ गई। उसने सोचा– ''मैं दुनिया में जो सबसे ताकतवर होगा उसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह करूँगी।'' सबसे पहले चुहिया–का ध्यान सूरज पर गया, उसने सुन रखा था कि सूरज से कोई आँख मिला कर बात करने की हिम्मत नहीं कर सकता। सूरज से ताकतवर और कोई नहीं है। सूरज की बेटी को अपनी बहू बनाकर लाना ठीक रहेगा।

फिर क्या था सूरज से मिलने श्रीमती चुहिया जी चल पड़ी। वह किस रास्ते से गई? कैसे गई? उन्हें कितना चलना पड़ा यह कोई नहीं जानता। हाँ वह सूरज के पास पहुँच गई और बोली– ''ओ महा शक्तिवान सूरज! तुम सदा चमकते रहो तुम्हारा यश और बढ़े। मेरा बेटा सुंदर और गुणवान है मैं उसके विवाह के लिए सबसे ताकतवर व्यक्ति की बेटी खोज रही हूँ। लोग कहते हैं, तुमसे ताकतकर कोई नहीं है।''

''तुम ठीक कहती हो। बेशक मैं ताकतवर हूँ लेकिन धरती पर मुझसे भी ताकतवर कोई और है।'' सूरज ने कहा।

''कौन है वह?'' चुहिया ने आश्चर्य से पूछा।

''कोहरा।''

''वह कैसे?'' चुहिया ने पूछा।

''जब मेरे और धरती के बीच कोहरा छा जाता है तो मैं धरती तक नहीं पहुँच पाता, अपने बच्चों को नहीं देख पाता।'' सूरज का इतना कहना था कि चुहिया ने सूरज से विदा ली। कोहरे के पास चल दी। कोहरे के पास पहुँच कर चुहिया बोली– ''कोहरे भाई, मैं तुम्हारे पास इसीलिए आई हूँ कि सूरज ने मुझे बताया है कि तुम उससे भी ताकतवर हो। मैं अपने बेटे का विवाह सबसे ताकतवर की बेटी से करना चाहती हूँ।''

''हो सकता है, मैं सूरज से ज्यादा ताकतवर हूँ पर हवा मुझसे भी अधिक शक्तिशाली है। हवा मुझे जहाँ चाहे उड़ा कर ले जा सकती है। कभी मुझे चट्टान से टकराती है, कभी आसमान में दौड़ती है। हवा एक गेंद की तरह मुझसे खेलती है।''

''तुमने सच बोला इसलिए धन्यवाद। अब मैं चलती हूँ।'' कहकर चुहिया ने कोहरे को नमस्कार किया।

हाँफती–हाँफती चुहिया हवा के पास पहुँची। हवा से अपनी बात कही।

''मैं सबसे ताकतवर हूँ, तुम्हारा यह सोचना गलत है चुहिया बहन! मुझसे भी ताकतवर है धरती पर।'' हवा ने कहा।

''कौन है वह?''

''सांड। वह खुले मैदान में घास चरता होता है। मैं कितनी भी तेज चलूँ वह टस-से-मस नहीं होता, उसकी पूँछ तक नहीं हिलती।'' हवा की बात सुनकर चुहिया निराश नहीं हुई। वह चारागाह की तरफ चल दी। वहाँ उसे सांड घास चरता हुआ मिल गया। चुहिया ने सांड को सारी बात बताई। सांड हँसा और बोला- ''मुझे सबसे अधिक ताकतवर समझना तुम्हारी भूल है चुहिया बहन!''

''तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?'' चुहिया ने पूछा।

''क्योंकि मुझसे अधिक ताकतवर हल है। हल के जुए के नीचे मुझ जैसे कई सांड जोत दिए जाते हैं। हल में जुते हुए हमारे कंधे तक छिल जाते हैं। हमें इतनी मेहनत करनी पड़ती है कि हम दुबले हो जाते हैं। खड़ा होना भी कठिन हो जाता है। तुम्हीं सोचो, हल मुझसे अधिक ताकतवर हुआ।''

''अच्छा चलती हूँ नमस्ते।'' कहकर चुहिया 'हल' को ढूँढने लगी। चुहिया खेतों की तरफ चल दी। वहाँ उसे हल मिल गया, किसान उसे साफ करके एक तरफ रख रहा था। किसान झोंपड़ी में जाकर सुस्ताने लगा तो चुहिया हल के पास आई और अपनी बात कही। ''अगर मैं कहूँ कि मैं सबसे ताकतवर हूँ तो मेरा यह कहना गलत होगा। मैंने कभी झूठ नहीं बोला, अब झूठ बोलने पर सब मेरी हँसी उड़ाएँगे।''

''लेकिन क्यों? चुहिया ने परेशान हो कर पूछा।

''मेरी कहानी सुनने के लिए धीरज से काम लो। मुझे खींचने के लिए कई ताकतवर सांडों की आवश्यकता होती है। मुझे चलाने वाला किसान अपने काम में बहुत होशियार होता है। यदि किसान कोई झाड़-झंखाड़ से भरी जमीन जोतता है, तो मेरा दम घुटने लगता है, लड़खड़ाने लगता हूँ। जुताई करते समय बीच में कोई जड़ आ जाए तो मुझे बहुत पीड़ा होती है। जड़ मुझे हिलने नहीं देती, उसके आगे मेरी ताकत नहीं चलती, किसान बार-बार मुझे जड़ से टकराता है। तुम जान गई होगी कि जड़ के आगे मुझे झुकना पड़ता है।'' हल ने कहा।

निराश होकर चुहिया हल के पास से लौट आई, और सोचने लगी कि लोगों के कहने पर नहीं जाना चाहिए। असली बात का पता उस व्यक्ति से मिलने पर ही चलता है। लोग सूरज को सबसे अधिक ताकतवर मानते हैं और सूरज कोहरे को। इसी तरह हवा से अधिक ताकतवर सांड और सांड से अधिक ताकतवर जड़ नजर आती है, ''वह जड़ जिसे हल ताकतवर मानता है वह मेरे आगे कुछ भी नहीं। मैं पल में जड़ को कुतर सकती हूँ। न जाने क्यों मैं भी सबसे अधिक ताकतवर की खोज के चक्कर में पड़ गई।''

उसके बाद चुहिया ने अपनी ही जाति की एक सुंदर स्वस्थ चुहिया से अपने बेटे का विवाह कर दिया।

- दिल्ली

हमारा वासन्ती पर्व–होलिकोत्सव

– गोवर्द्धन शर्मा

भारतीय जन जीवन में व्रतों, पर्वों और त्यौहारों का विशेष महत्व रहा है। आदिकाल से ये व्रत, पर्व और त्यौहार हमारे आन्तरिक उल्लास, श्रेष्ठ जीवनादर्शों, स्नेह, सौहार्द और विश्व–बन्धुत्व की पुनीत भावनाओं के प्रतीक रहे हैं। धार्मिक पृष्ठ भूमि से मण्डित होने से ये हमारी धार्मिक आस्थाओं, सद्विचारों तथा सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण और उनके प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका का निर्वाह करते रहे हैं। यही कारण है कि संसार की अनेक महान सभ्यताएँ अपनी सारी श्रेष्ठताओं के बावजूद समाप्त हो गई, किन्तु भारतीय सभ्यता और संस्कृति आज भी अपने गौरवपूर्ण अतीत के साथ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उच्चादर्श से सारे संसार का मार्गदर्शन करने को विद्यमान है।

सारे ही भारतीय व्रत, पर्व और त्यौहार वस्तुत: ऋतु परिवर्तन या ऋतु विशेष की महत्ता के प्रतिपादक रहे हैं, जिनकी सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जनमन रंजन के साथ विगत की गौरवमयी परम्पराओं और आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को परिपुष्ट करती रही है। वासन्ती पर्व होलिकोत्सव इसका प्रतीक है।

वास्तव में होली ऋतु परिवर्तन और नई फसलों के आने के पश्चात भारतीय जन–जीवन के उल्लास को रंग गुलाल के माध्यम से अभिव्यक्ति देने

वाला एवं समाज को समानता तथा भ्रातृत्व भाव से सुसंगठित करते हुए सारी बुराइयों के मध्य सत्य की महत्ता प्रतिपादित करने वाला त्योहार है। इससे संबद्ध भक्त प्रह्लाद की पौराणिक गाथा इस तथ्य को उजागर करती है। अत: सारी वैमनस्यता, ऊँच–नीच, गरीब, अमीर, मानापमान और मानस के वातावरण का सृजन करना ही इस वासन्ती पर्व होलिकोत्सव का मूल उद्देश्य रहा है।

श्रीकृष्ण और राधाजी का होली खेलने का प्रसंग भी इस पर्व की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है। गीत–संगीत और नृत्य की हमारी प्राचीन परम्पराएँ इसी के माध्यम से आज तक विश्व को सम्मोहित करने में सक्षम रही हैं। इसी वासन्ती पर्व की पृष्ठ भूमि में भारतीय शास्त्रीय संगीत की सुमधुर स्वर लहरियाँ भारतीय जन–मानस को आध्यात्मिकता के रंग में भिगोकर परमानन्द की अनुभूति कराने में पूर्णत: समर्थ रही हैं। यही भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशेषता है।

समय के साथ होलिकोत्सव में कई विकृतियाँ समाहित हो गई है। रंग गुलाल के स्थान पर कीचड़ और कालिख का प्रयोग करना, शराब पीकर अश्लील हरकतें करना, मस्ती के आलम में जोर जबरदस्ती द्वारा गाली–गलोच, मारपीट और अशांति की स्थिति उत्पन्न करना आदि ऐसी ही विकृतियाँ हैं। इनसे उल्लास के प्रतीक इस होलिकोत्सव की गरीमा को आघात पहुँचता है। अत: गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत के परिप्रेक्ष्य में इन विकृतियों को दूर कर होलिकोत्सव को पूर्ण शालीनता से मनाने की आवश्यकता है। साहित्य, संगीत, नृत्य एवं अन्य सुरूचि पूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों के साथ प्राचीन परम्परा के अनुसार इस पर्व को मनाना राष्ट्र और समाज के हित में उपयोगी हो सकता है।

आइये! रागरंग, उल्लास और आनन्द के पर्व इस होलिकोत्सव पर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने की इस शपथ लें और कामना करें–

मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:।
माघ्वीर्न: सन्त्वोषधी:।।
मधुनक्तमुतोसि मघुमत्पार्थिवं रज:।
मधुद्यौरस्तु न: पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मघुमाँ अस्तु सूर्य:।
माध्वीर्गावो भवन्तु न:।।

ऋग्वेद १.१४.९०, ६.७.८

यथा

''वायुएँ मधुवर्षिणी हों,
सदाप्रवाहित नदियाँ मधुमयी हों।
मानव मात्र के लिए औषधियाँ मधुमयी हो।
रात्रि मधुमयी हो। चन्द्रमा मधुवर्षी हो।
पृथ्वी की मिट्टी मधुमयी हो।
वृष्टि प्रदान करने वाला
पितृ तुल्य आकाश मधुमय हो।
वनस्पति मधुपूर्ण हो।
सूर्य मधुवर्षी हो
और हमारी गाये मधुमयी हों।''

– जावरा (म. प्र.)

गुढ़ी पड़वा

– प्राजक्ता देशपांडे

गाँव में आज बहुत रौनक थी। हर घर के बाहर रंगोली बनी थी, हर छत पर गुढ़ी लहरा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा गाँव नए वर्ष का स्वागत कर रहा हो।

लेकिन अद्‌वैत के मन में अजीब–सी उदासी थी।

वह चुपचाप अपने घर के आँगन में खड़ा ऊपर लहराती गुढ़ी को देख रहा था। जिसमें कडवी नीम की पत्तियाँ, फूलों का हार, बताशे की माला, चमचमाता कलश, लगा हुआ था।

हर वर्ष की तरह दादी ने उसे इन सबका महत्व भी समझाया था जैसे नीम की पत्तियाँ बीमारी से बचाती है आदि।

''हर वर्ष यही होता है इसमें क्या नया है?'' उसने मन ही मन सोचा। माँ पूजा की तैयारी कर रही थीं। अद्‌वैत ने पूछा, ''माँ! यदि आज नया वर्ष है तो लोग सच में नए क्यों नहीं बनते?''

माँ ने उसकी ओर देखा और बोलीं, ''शायद इसलिए क्योंकि नया बनना आसान नहीं होता, बेटा।''

यह जवाब अद्‌वैत के मन में अटक गया। ''तो क्या नया वर्ष भी नीम की तरह कड़वा ही होता है?'' उसने दादी से पूछा।

दादी मुस्कुराई, ''यदि हम किसी की सहायता करें तो नया वर्ष भी मीठा हो जाएगा?''

दिन के खाने में अद्‌वैत ने भरपेट श्रीखंड–पूरी खायी दुपहरी में उसे तेज नींद आ गयी।

''धड़ाम!'' इस आवाज से उसकी नींद टूटी। पड़ोस की काकी के घर की गुढ़ी तेज हवा से अचानक जमीन पर गिर गई।

''अरे! इनका नया वर्ष तो गिर ही गया।'' बच्चे हँसकर ताली बजाने लगे।

घर के बाहर खड़ी बूढ़ी काकी परेशान हो गईं। उनके हाथ काँप रहे थे। सब लोग अपनी–अपनी गुढ़ी देखने लगे, लेकिन कोई आगे नहीं बढ़ा। अद्‌वैत ठिठक गया।

वह दौड़कर काकी के पास पहुँचा उसने गुढ़ी की रस्सी खोली। उस पर लगे सब सामान को व्यवस्थित किया फिर बमुश्किल उसे धीरे–धीरे खड़ा किया।

उसकी इस पहल से आस–पास उपस्थित लोग भी उसकी सहायता के लिए आगे आये सबने मिलकर काकी की गुढ़ी फिर से खड़ी कर दी।

उसने कहा– ''यदि नया वर्ष ऊपर लहराने के लिए है, तो उसे किसी की सहायता से प्रारंभ होना

चाहिए।'' अब दो गुढियाँ एक साथ खड़ी थीं।

काकी की आँखें भर आईं उन्होंने उसे अनेक आशीर्वाद दिए।

शाम को गुढ़ी उतारते हुए दादी ने कहा– ''आज अद्वैत ने गुढ़ी को केवल खड़ा ही नहीं किया, बल्कि उसका मतलब भी समझा।''

अद्वैत ने गुढ़ी की ओर देखा। अब वह उसे ऊपर लगी सजावट नहीं, बल्कि नीचे झुककर सहायता करने की सीख लग रही थी। दादी की सीख उसे अब समझ में आ गई की गुढ़ी हमें सिखाती है कि नया वर्ष केवल ऊपर देखने का नहीं, आवश्यकता पड़ने पर नीचे झुकने का भी नाम है।

– इन्दौर (म. प्र.)

सनातन
हिन्दू नववर्ष
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
विक्रम संवत् २०८३
की
हार्दिक
शुभकामनाएँ।
आपका अपना
देवपुत्र परिवार

प्रसंग – बलिदान दिवस २३ मार्च

मेरे तीन रिश्तेदार

– डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव

बात उस समय की है जब सरदार भगतसिंह को फाँसी दी जाने वाली थी, ऐसे अवसर पर सरकार परिवार के लोगों को अंतिम भेंट के लिए बुला लेती है। पर सरदार भगतसिंह से मिलने उस समय कोई नहीं आया था।

इसी संदर्भ में भारतीय गदर आन्दोलन के एक नेता श्री. सोहन सिंह भगना ने एक दिन भगतसिंह से पूछा– ''भगत! तुम्हारे कोई रिश्तेदार तुमसे मिलने नहीं आए?''

उत्तर में भगतसिंह बोले– ''बाबाजी, मेरे खून का रिश्ता तो शहीदों के साथ है जैसे खुदीराम बोस और करतारसिंह सराबा। हम एक ही खून के हैं– हमारा खून एक ही जगह से आया है और एक ही जगह जा रहा है।

दूसरा रिश्ता आप लोगों के साथ है, जिन्होंने हमें प्रेरणा दी है और जिनके साथ काल कोठरी में हमने पसीना बहाया है।

तीसरे रिश्तेदार वे होंगे जो खून–पसीने से तैयार किए गए मिशन को आगे बढ़ायेंगे।

– ग्वालियर (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

मुस्कुराता बचपन

मूल्य– ४००/–

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार विमला रस्तोगी जी की यह एक लघु आलेखों वाली महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसकी उपयोगिता बच्चों की अपेक्षा बड़ों यानी माता–पिता व बालसाहित्यकारों के लिए विशेष है। सरल भाषा, संक्षिप्त आकार पर गहरे मनोवैज्ञानिक आधार युक्त विचार वाली यह पुस्तक बहुत ध्यानाकर्षण करने वाली है।

प्रकाशक– अनुराग प्रकाशन, ४७६०–६१, द्वितीय तल, २३ अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली–०२

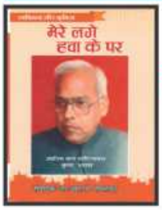

मेरे लगे हवा के पर

मूल्य– १५५०/–

स्व. श्री कृष्ण 'शलभ' बाल साहित्य जगत के वे अमिट हस्ताक्षर हैं जिन्होंने बालसाहित्य सृजन और समीक्षा दोनों दृष्टि से कृतियाँ ही नही एक पूरी पीढ़ी का निर्माण किया है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शब्दबद्ध करके एक स्मृति कोश के रूप में संपादित कर डॉ. आर. पी. सारस्वत ने ग्रंथाकार में प्रस्तुत किया है। ५४२ पृष्ठीय इस ग्रंथ का पृष्ठ–पृष्ठ श्री शलभ जी की साहित्य साधना के पक्ष उजागर करता है जिनका प्रकाश वर्षों पथ दिखाता रहेगा।

प्रकाशक– अविचल, प्रकाशन 'सावित्री' १५ वृन्दा विहार निकट अमृत आश्रम, पो. हरिपुर नायक ऊँचापुल चौफुला काठ गोदाम रोड हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड–२६३१३९

पंचतत्र की श्रेष्ठ कहानियाँ

मूल्य– १२०/–

डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाण्डे की हिन्दी और अँग्रेजी भाषा में लिखी पंचतंत्र की प्राचीन कथाओं की यह सम्पूर्ण बहुरंगी सचित्र पुस्तक अत्यन्त मनभावन कलेवर में प्रस्तुत हुई है।

प्रकाशक– लायन्स पब्लिकेशन, २३ महादजी नगर ग्वालियर–४७४००१ (म. प्र.)

काव्य मंजुषा

मूल्य– ४५/–

बाल साहित्य में विज्ञान लेखन हेतु प्रसिद्ध लेखिका इन्दु पाराशर द्वारा कविता और कहानी को हमजौली करने का यह सुन्दर प्रयोग पद्य कथाओं के रूप में लिया गया है। सुपरिचित बालकथाएँ बाल काविता का चोला पहनकर अत्यन्त मनोहर बन गई है।

प्रकाशन–एस.के. पाराशर ई–२४०६ सुदामानगर, इन्दौर (म. प्र.)

चमत्कार मंत्र का
और अन्य बाल कहानियाँ

मूल्य– २००/–

सुख्यात बाल साहित्यकार महेन्द्र कुमार वर्मा द्वारा प्रस्तुत इस कृति में १५ सरस, रोचक व बालमन को लुभाने वाली बाल कहानियाँ हैं।

प्रकाशक– काव्यांजलि प्रकाशन ई–३३५, पार्श्वनाथ अपार्टमेंट नान्ता कोटा–०४ (राज.)

अनूठे सच

इस्ट ससेक्स (इंग्लैण्ड) की एलिजाबेथ क्रिस्ट्रेनसेन ने 39 वर्ष की आयु तक चेहरे की 23 बार प्लास्टिक सर्जरी करवाई. उसने सर्जरी पर 1 लाख पाउंड खर्चा कर डाला क्योंकि वह 14 वीं शती ई.पू. की मिस्र की रानी नेफेरटिटी जैसी हूबहू दिखना चाहती थी.

कोई भी वजन कम करने के मामले में सूर्य को नहीं हरा सकता. दस लाख टन प्रति सेकंड की दर से सूर्य का वजन कम हो रहा है.

वृहत अफ्रीकन तिलचट्टे (कॉक्रोच) बैंकाक (थाइलैण्ड) के प्रसिद्ध पालतू जीव हैं.

मानवीय हड्डियां सफेद नहीं होती. वे हल्के भूरे से कत्थई रंग की होती हैं. वैज्ञानिकों द्वारा सुरक्षित रखी हड्डियां सफेद इसलिए दिखती हैं क्योंकि वे उबाल कर साफ कर ली जाती है.

राजा शिबि की परीक्षा

– मोहनलाल जोशी

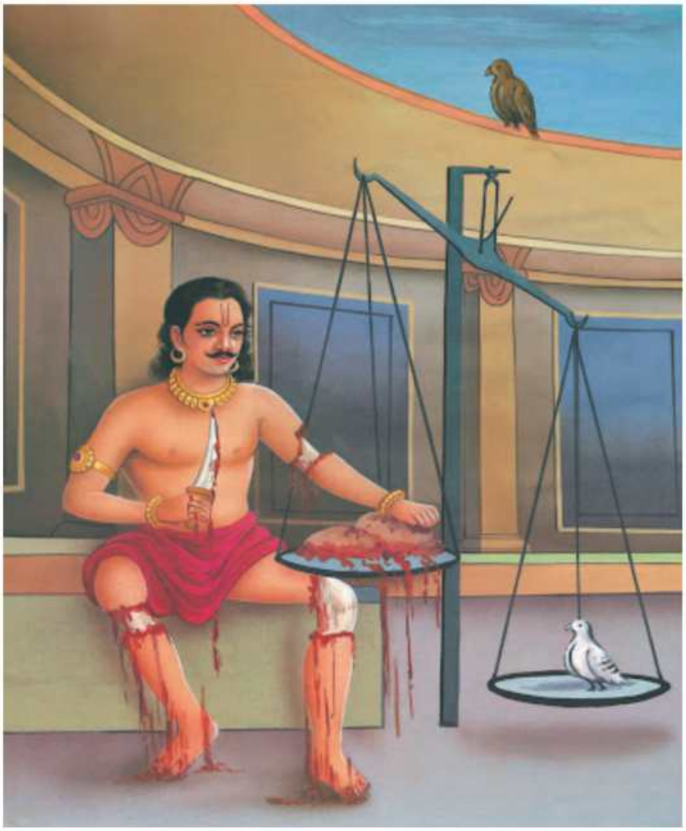

पाण्डवों का वनवास चल रहा था। उनसे मिलने मार्कण्डेय मुनि आए उन्होंने युधिष्ठिर को कई कथाएँ सुनाईं।

मार्कण्डेयजी ने युधिष्ठिर से कहा– राजन! एक क्षत्रिय राजा थे। उनका नाम शिबि था। एक बार इन्द्र और अग्निदेव उनकी परीक्षा लेने आए। एक बाज तथा एक कबूतर बन गया। राजा की सभा चल रही थी। कबूतर उड़ता हुआ राजा की गोदी में बैठ गया। कबूतर ने कहा– राजन! मेरे प्राण बचाओ। मैं आपकी शरण में आया हूँ।

तभी बाज आ गया। उसने कहा– राजन! यह कबूतर मेरा भोजन है। मैं भूखा हूँ। इसे मुझे दे देंगे। शिबि ने कहा– कबूतर मेरी शरण में आया है। तुम दूसरा भोजन ले लो। बाज ने कहा– मुझे कबूतर ही चाहिये। नहीं तो इसके भार के बराबर आपके शरीर का माँस दे दो।

राजा ने कबूतर को तराजू में रखो। दूसरे पलड़े में अपने हाथ पैर आदि का माँस काटकर रखा। कबूतर भारी होता गया। बाद में राजा स्वयं तराजू में बैठ गया। इन्द्र और अग्निदेव प्रसन्न हो गए। वे अपने असली वेश में आ गए। राजा को आशीर्वाद दिया।

पांडवों का अज्ञातवास

पांडवों के बारह वर्ष का वनवास पूरा हो गया। उनको एक वर्ष अज्ञातवास में रहना था। पांडवों ने अपने अस्त्र–शस्त्र एक शमी वृक्ष में छिपा दिये। सभी ने अपना वेश बदल दिया। फिर वे मत्स्य देश गये। वहाँ का राजा विराट था। वे राजा विराट के आश्रम में रहने लगे।

युधिष्ठिर 'कंक' नामक ब्राह्मण बन गए। वे राजा विराट को सलाह देते थे। भीम 'वल्लभ' नामक रसोईया बन गया। वह राजमहल में खाना पकाता था। अर्जुन 'बृहन्नला' नामक स्त्री का वेश धारण कर लिया। वह राजकुमारी को संगीत और नृत्य सिखाने लगा। नकुल ने 'ग्रंथिक' नाम रख लिया। वह पेड़ों की रखवाली करता था। सहदेव 'तंत्रियाल' नाम का चरवाह बन गया। द्रौपदी 'सैरंध्री' बन कर विराट की रानी की सेवा करती थी। इस प्रकार पांडवों ने एक वर्ष का अज्ञातवास पूरा कर लिया।

विद्यार्थियों के लिए

– डॉ. मनोहर भंडारी

विद्यार्थियों के लिए– पौष्टिक भोजन करें। फास्टफूड और जंक फूड कदापि ना खाएँ। **जंक फूड डाइट लीव्स लास्टिंग डैमेज इन एडोलेसेंट ब्रेन** नामक शोध के अनुसार अस्वास्थ्यकर आहार स्मरण शक्ति, एकाग्रता, ध्यान, सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। व्यायाम और प्राणायाम अत्यन्त ही आवश्यक है। सात–आठ घण्टों की नींद अवश्य लें। पढ़ाई को बोझ न मानें। प्रसन्नता के साथ खेल समझकर पढ़ाई करें। ब्रह्ममुहूर्त का अर्थ है, ज्ञान प्राप्ति का श्रेष्ठ समय। जल्दी जागें। विषय को केवल पढ़ने की बजाय विषय की समग्रता से कल्पना करें मानचित्र और रेखाचित्र बनाएँ। स्वयं को अवधारणा समझाएँ और ऐसे प्रश्न तथा समस्याएँ तैयार करें, जिनके माध्यम से आप विषय को समग्रता से समझ सकें। साथ ही अपने बनाए प्रश्नों और समस्याओं का हल कर सकें।

अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट और शिक्षाविद् **डॉ. विलियम ग्लासर** के अनुसार यदि आप किसी अन्य को विषय समझाकर पढ़ा देते हैं तो उस विषय का ९५% भाग आपकी स्मृति में स्थायी रूप से अंकित हो जाता है। इसलिए अपने साथियों को पढ़ाएँ। हर एक विषय के संक्षिप्त नोट्स बनाएँ, ताकि परीक्षा के दिनों में रिवीजन करने में कम समय लगें

वैज्ञानिकों के अनुसार लिखकर याद करने से मस्तिष्क की क्षमता में वृद्धि होती है। दोहराने का अत्यधिक महत्व है, करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। लगातार पढ़ने की बजाय हर घंटे बाद पाँच–सात मिनट का विराम दें। दिन में दस–पन्द्रह मिनट की तीन–चार बार झपकी लेने से मस्तिष्क की सजगता बढ़ती है। फ्लौरिडा विश्व विद्यालय के **डॉ. रॉबिन बेस्ट** के अनुसार अच्छी

तकनीक, अभ्यास और मानसिक प्रेरणा से स्मरण शक्ति बढ़ सकती है। ब्रिटेन के प्रसिद्ध लेखक, कोशकार और उपदेशक **डॉ. सैम्युअल जॉन्सन** के अनुसार स्मरण शक्ति सतर्कता की कला है, आनन्द के साथ जो पढ़ा जाता है, वह स्मृति का भाग बन जाता है। क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट **डॉ. क्रिस मोसुनिक** के अनुसार हल्की और उथली साँस से मस्तिष्क की कोशिकाओं की सक्रियता और क्षमता कम हो जाती है। जल्दी थकान और विचारों में धुंधलापन आ जाता है। इसलिए गहरी साँस का अभ्यास करें। परीक्षा से डरें नहीं, उसे खेल की तरह लें। परीक्षा में यदि किसी प्रश्न का उत्तर याद नहीं आ रहा हो तो पाँच छः बार गहरी साँस लें।

असफलता को भी खेल का भाग ही मानें। भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम कहते थे, **फैल (FAIL) का अर्थ है, फर्स्ट अटेम्प्ट इन लर्निंग।** किसी भी तरह के तनाव को हावी ना होने दें।

तनाव की स्थिति में दो–तीन मिनटों तक गहरी साँस लें, अच्छा संगीत सुनें, डायरी लिखें, माता–पिता–मित्रों से बात करें। भजन सुनें या गाएँ।

इन छोटे–छोटे उपायों से तनाव से मुक्ति पाई जा सकती है। चुनौतियों से ना तो डरें और न ही घबराएँ। चुनौतियाँ मस्तिष्क में नई कोशिकाओं का निर्माण करती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्तित्व में निखार आता है, तथा चुनौतियों से निपटने की क्षमता और दक्षता का विकास होता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

देवपुत्र बाल पाठक प्रतियोगिता आयोजित

गुना। स्थानीय सरस्वती शिशु/विद्या मंदिर उ. मा. विद्यालय महावीरपुरा गुना में 'देवपुत्र' बाल पाठक प्रतियोगिता का समापन समारोह आयोजित किया गया। विद्याभारती मध्यभारत प्रांत की योजनानुसार देवपुत्र मासिक बाल पत्रिका का सम्पादन किया जाता है जो प्रान्त के समस्त विद्यालयों के भैया–बहिनों तक पहुँचाई जाती है जिसका अध्ययन कर भैया–बहिन विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। भैया–बहिनों के परीक्षण हेतु इस वर्ष विद्या भारती मध्यभारत प्रांत द्वारा देवपुत्र बाल पाठक प्रतियोगिता का आयोजन जिला स्तर पर दिनांक ११/०१/२०२६ को जिले के समस्त विद्यालयों में निर्धारित पर्यवेक्षकों के मार्गदर्शन में सम्पन्न कराया गया। यह परीक्षा दो समूहों बाल वर्ग (कक्षा ४ से ८ तक) एवं किशोर वर्ग (कक्षा ९ से १२ तक) के भैया–बहिनों के लिए सम्पन्न कराई गई जिसमें बाल वर्ग में भैया दिव्यांश ओझा (प्रताप नगर, गुना) ने प्रथम स्थान, बहिन काजल धाकड़ (ग्राम अजरोड़ा) ने द्वितीय स्थान तथा बहिन दिशा नागर (ग्राम अजरोड़ा) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं किशोर वर्ग में बहिन जयश्री शर्मा (महावीरपुरा, गुना) ने प्रथम स्थान, बहिन प्रियंका राजपूत (महावीरपुरा, गुना) ने द्वितीय स्थान तथा बहिन महक धाकड़ (महावीरपुरा, गुना) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समस्त विजयी प्रतिभागियों को उनके अभिभावकों के साथ अतिथियों द्वारा स्मृति एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम का आरंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत कल्याण केन्द्र समिति के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। तदुपरांत देवपुत्र पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री. नारायण जी चौहान ने कार्यक्रम की भूमिका एवं प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री. कृष्ण पाल सिंह जी किरार (पूर्व छात्र सरस्वती शिशु मंदिर, चंदेरी) ने भैया–बहिनों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य की ओर फोकस करना चाहिए। अनुशासन से ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

कार्यक्रम में मंच पर श्री. कृष्ण पाल सिंह किरार (उपसंचालक उद्यानिकी विभाग गुना), श्री. नारायण जी चौहान (प्रबंध संपादक देवपुत्र, इन्दौर) श्री. महेन्द्र रघुवंशी (प्रांतीय सह सचिव, विद्याभारती मध्यभारत प्रांत), श्रीमती रश्मि रघुवंशी (प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य, विद्याभारती मध्यभारत प्रांत), श्री. गुरुचरण गौड़ (विभाग समन्वयक, राजगढ़ विभाग), श्री. चन्द्रशेखर कुशवाह (संयोजक देवपुत्र बाल पाठक प्रतियोगिता, जिला गुना) उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री. विवेक बाण्डे एवं आभार श्रीमती रीना पाराशर द्वारा व्यक्त किया गया।

देवपुत्र बाल पाठक प्रतियोगिता सम्पन्न

मन्दसौर। सरस्वती बाल कल्याण न्यास की योजना से 'देवपुत्र' के बाल पाठकों के प्रोत्साहन हेतु मालवा प्रांत के मंदसौर जिले में स्वामी विवेकानंद जयंती १२ जनवरी २०२६ को जिले के बारह विद्यालयों सीबीएसई संजीत मार्ग, आवासीय विद्यालय संजीत मार्ग केशवनगर, अभिनंदन नगर, पिपलिया मंडी, मल्हारगढ़, सीतामऊ, सुवासरा, शामगढ़, गरोठ, भानपुरा और गाँधी सागर के २४९८ भैया/बहिनों ने 'देवपुत्र बाल पाठक प्रतियोगिता' में सहभागिता की।

बालवर्ग की प्रतियोगिता में भैया बलराम पाटीदार (सीबीएसई, मन्दसौर) प्रथम बहिन किशिका जोकचन्द्र (केशवनगर) द्वितीय बहिन योगिता दीवान (गरोठ) तृतीय रहे। किशोर वर्ग में बहिन (प्रयांशी माली (सीबीएसई की दो) प्रथम, बहिन अंशिका गेहलोद (केशवनगर) द्वितीय एवं व तनिषा माली (सीबीएसई) तृतीय है।

सभी भैया-बहिनों से प्रतियोगिता उपरांत अभावी तरंग माध्यम से देवपुत्र केन्द्रित संवाद सत्र में देवपुत्र के संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी ने चर्चा की।

उपर्युक्त प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण गणतंत्र दिवस २६ जनवरी को जिला केन्द्र केशव नगर मंदसौर में भव्य समारोह में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरस्वती बाल कल्याण न्यास के प्रबंध न्यासी, एचएएल के स्वतंत्र निदेशक व विद्याभारती मालवा प्रांत के कोषाध्यक्ष सीए. राकेश जी भावसार, सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री जी. डी. सक्सेना, प्रमुख अतिथि विभाग समन्वयक श्री राघवेन्द्र जी देराश्री एवं मिलिन जी व्यास (व्यवस्थापक, श्री राजेन्द्रसिंह शिक्षण समिति) रहे। आयोजन की भूमिका संपादक गोपाल माहेश्वरी ने प्रस्तुत की। प्राचार्य श्री मुकेश जी पाठक एवं प्रधानाचार्य श्रीमती पिंकी गुर्जर एवीं आचार्यों के सक्रिय सहयोग से आयोजन गरिमापूर्ण संपन्न हुआ।

भैया-बहिनों द्वारा संपादित हस्तलिखित पत्रिकाओं के लोकार्पण एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति अलग प्रभावी रही। इस अवसर पर बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक भी सम्मिलित हुए।

कोरबा में देवपुत्र बाल महोत्सव

कोरबा। विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबंद्ध सरस्वती शिक्षा संस्थान छत्तीसगढ़ रायपुर के अन्तर्गत सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर (म. प्र.) के तत्वावधान में देवपुत्र बाल महोत्सव सरस्वती शिशु मंदिर उच्च. मा. विद्यालय, सी.एस.बी. कोरबा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्‌घाटन मान. डॉ. देवनारायण साहू (प्रांतीय संगठन मंत्री, सरस्वती शिक्षा संस्थान छ. ग. रायपुर) मान. श्री. जुड़ावन सिंह ठाकुर (उपाध्यक्ष, मध्यक्षेत्र) श्री. चंद्रकिशोर श्रीवास्तव (सचिव वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़) श्री. जोगेश लाम्बा व्यवस्थापक, सरस्वती शिक्षा समिति, कोरबा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

देवपुत्र बाल महोत्सव में कोरबा विभाग के ०६ शिशु मंदिर (सरस्वती उ.मा.वि.सी.एस.ई.बी., सीतामढ़ी, बस स्टेण्ड, प्रगति नगर, दर्री एवं कुसमुण्डा) से २९० भैया–बहिन सम्मिलित हुए।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि मान. श्री. तामेश्वर उपाध्याय (जिला शिक्षा अधिकारी कोरबा) थे। अध्यक्षता मान. श्री. जुड़ावन सिंह ठाकुर, (उपाध्यक्ष, मध्यक्षेत्र) ने की। यह सत्र मान. डॉ. देवनारायण साहू (प्रांतीय संगठन मंत्री) श्री. चंद्रकिशोर श्रीवास्तव (सचिव वनांचल शिक्षा सेवा न्यास छत्तीसगढ़) आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री. गौरीशंकर कटकवार (प्रांत प्रमुख) श्री. कीर्ति कुमार अग्रवाल (विभाग प्रमुख कोरबा) श्री. दीपक सोनी (कोरबा विभाग), श्री. गेंदराम राजपूत (बिलासपुर विभाग) जिला प्रतिनिधि श्री. अर्जुन पटेल, (जिला प्रतिनिधि, कोरबा) श्री. रवीन्द्र सराफ (जिला प्रतिनिधि जाँजगीर–चाम्पा) तथा नरेश जायसवाल प्रांत प्रमुख, वनांचल सेवा न्यास छ. ग.), श्री. राजकुमार देवांगन, प्राचार्य सरस्वती शिशु मंदिर सीएसईबी कोरबा एवं प्रगति नगर, कुसमुण्डा, दर्री, बस स्टैण्ड तथा सीतामढ़ी विद्यालय के प्राचार्य उपस्थित थे।

देवपुत्र पत्रिका संपादक श्री. गोपाल माहेश्वरी द्वारा मंचस्थ अतिथियों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागी भैया–बहिनों को सहभागिता प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया एवं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त भैया–बहिनों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर प्रोत्साहित किया गया।

मुख्य रूप से देवपुत्र बाल महोत्सव के संयोजक श्री. जोगेश लाम्बा, सह–संयोजक श्री. राजकुमार देवांगन, सदस्य श्री संजय देवांगन, श्री. पंकज तिवारी, श्री. विद्यानंद पाण्डेय, श्री. ओमकार शुक्ला, श्री. लक्ष्मीनारायण जायसवाल, श्री. दीपचंद जंघेला, श्रीमती सुषमा बारस्कर एवं विद्युत मण्डल कोरबा के आचार्य–भगिनियों को विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

बाल कविता – हिन्दू नववर्ष : चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

नए वर्ष जी

– भगवती प्रसाद गौतम

नरम दूब के बिछे फर्श जी।
स्वागत में फिर नए वर्ष जी।।
फिर से मात तिमिर ने खाई।
धीरे–धीरे पौ फट आई।
कलियाँ चटकीं, बगिया महकी।
चिड़ियों की महफिल भी चहकी।
उतरी नूतन भोर सुनहरी।
जग जागा तज निंदिया गहरी।
जागे घर के सभी बड़े हैं।
लो हम भी तैयार खड़े हैं।
मन में थोथी चाह न पालें।
न्यारी अपनी राह बनालें।
श्रम के पथ पर चल पड़ना है।
हर दुख से मिलकर लड़ना है।
घर–बाहर छा गया हर्ष जी।
स्वागत–स्वागत नए वर्ष जी।

– कोटा (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०२/२०२६ प्रेषण तिथि २८/०२/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

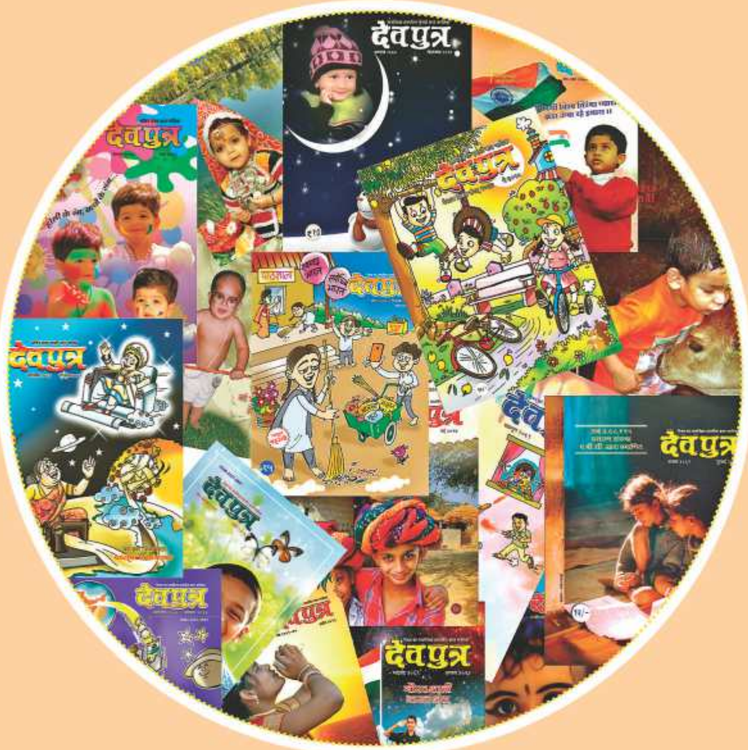

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी